केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ जूलाई २०१२, वर्ष १९, नं ६०, लक्ष्मीनगर, D-1, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४

हमारे राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखरजी

3rd Viswa Hindi Sammelan New Delhi - 1983

Sri.P.V. Narsinha Rao
Chairman
Award Committee

Sri Madhukar Rao Chauthary
Organizing Chairman

Sri Bachu prasad sing
President, Organizing Committee

Prof. Vijayendra Snatak,
Secretary

Sri. Gopal Krishna Adig
Bangalore

Sri Navakanth Barva
Assam

Sri Na Nagappa
Bangalore

Sri. Abdur Rahman Rahi
Sreenagar

Sri. Gulam Rabbani Thabam
New Delhi

Sri.Gulab Das Brokker
Bombay

Sri. Viyogi Hari
Delhi

Pandid Sreenarayan
Chathurvedi,
Lacknow

ACHARYA SRI PATTABHIRAMA SASTRI
Varanasi

Dr. Swami Sathya Prakas Saraswathi
New Delhi

Dr. Har Bhajan sinh
Delhi

Sri. Jainendra Kumar,
New Delhi

Sri. Rameswar Dayal Dubay
WARTH

Smt. Indradasya Nayake
Srilanka

Dr. Harivamsa Ray Bachan
New Delhi

Sri Dayanandalal Vasantha Ray
Moricious

Dr. N. Chandrasekharan Nair
Trivandrum (Kerala)

Sri N.V. Krishna Warier
Kerala

THAKAZHI SIVASANKARA PILLAI
KERALA

Dr. Surendra Sivadas Barlinge
Poone

Sri. Gangasaran Sinha
New Delhi

Smt. Rajalekshmi Raghavan
New Delhi

Sri Jedhalal Joshi
Ahmadabad

Dr. Babu Ram Saksena
Ilahabad

Dr. Seethakanth Mahapathra
Orrissa

Sri Balasauri Reddy
Madras

Sri Sankar Rao Lodde
Wardha

Sri. Vijaya Thendul
Badri Dham
East Bombay

Sri Karuna Kusalasya

Sri Ahamad Hamesh

Sri Luc Ko Nan

Smt. Anna Maria D Engalis

Sri Alakseyee Barghudarov

Dr. Vivekananda Sharma
Phiii

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ जूलाई २०१२ अंक, वर्ष १८, नं ६०, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४

सम्पादक

डा० एन० चन्द्रशेखर नायर

संरक्षक

श्रीमती शांता बाई (बेंगलोर)
श्री. डी.शशांकन नायर
श्रीमती कमला पद्मगिरीश्वरन
डा० वीरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
डा० अमर सिंह वधान (पंजाब)
श्री. हरिहरलाल श्रीवास्तव (काशी)
श्रीमती के. तुलसी देवी (चेन्नै)
श्रीमती रजनीसिंह
डा. मिनी सामुवल
डा. चित्रा एन.आर.

परामर्श-मण्डल

डा० एस.तंकमणि अम्मा
डा० मणिकण्डन नायर
डा० पी.लता
श्रीमती आर. राजपुष्पम
श्रीमती एल. कौसल्या अम्माल
श्रीमती रमा उण्णित्तान

सम्पादकीय कार्यालय

श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पालस पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४
दूरभाष-०४७१-२५४१३५५

प्रकाशकीय कार्यालय

मुद्रित : (द्वारा)
श्रीरामदास मिशन मुद्रणालय,
चेंकोट्टकोणम, तिरुवनन्तपुरम-८७
मूल्य-एक प्रतिः २०.०० रुपये
आजीवन सदस्यता : १०००.००
संरक्षक : २०००.००

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्डूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतकल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरख्रडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लख्रनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाख्रपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडुः- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्चीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरातः-** अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटकः-** बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोगा, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्राः- मुम्बई,** कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंडगाबाद-३, औरंडगाबाद-२, औरंडगाबाद-१, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलहापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगालः-** कलक्कत्ता। **हैदराबादः-** सुल्तान बाज़ार। **गौहाटीः-** कानपुरा। **नई दिल्लीः-** आर, के पुरम। गोवाः- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। सम्पादक

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका केरल विश्व विद्यालय से अनुमोदित पत्रिकाओं की सूची में शामिल की गयी है। (संपादक)

www.hindisahityaacademy.com

सम्पादकीय

अकादमी का ३२वाँ वार्षिकोत्सव

हमें केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का ३२वाँ वार्षिकोत्सव चलाते हुए अतीव आश्वासन एवं कृतार्थता अनुभूत होती है। ३२ वर्षों के पहले हिन्दी प्रदेशों से बहुत दूर मलयालम भाषा बोलनेवाले भारत के सुदूर दक्षिण में हिन्दी साहित्य अकादमी की स्थापना करना सचमुच साहस का कार्य रहा था। हिन्दी और उसके साहित्य से तिरुवनन्तपुरम के लोग बिलकुल अनभिज्ञ रहे थे। इसकी स्थापना करने के मूल में मेरा एकमात्र लक्ष्य देशीय एकता एवं माहात्मा गाँधी के संकल्प का समर्थन रहा था। उन दिनों में भी प्रांतीयता तथा भाषापरक प्रश्न का विलगाव अनुभव होता था। राजनैतिक दलबंदी का संघर्ष भी ज़ोर पकड रहा था। उसी सन्दर्भ में एक आम भाषा अथवा संपर्क भाषा की ज़रूरत थी। हिन्दी का प्रचार काफी हो चुका था। स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद से भारतीय भाषाओं के बीच में हिन्दी का स्थान समन्वय और मिलवाई का है। हिन्दी संस्कृति के ज़ोर के कारण आगे है। संस्कृत की परंपरा से भी जुडी हुई है। इन सब कारणों से हिन्दी साहित्य के माध्यम से देश में भाषाई एवं भावात्मक एकता का सूत्रपात अपना लिया। संक्षेप में हिन्दी साहित्य के बल पर केरल में एक स्थाई संस्था स्पन्दित करने का पवित्र विचार आया। बस सन् १९८० को हिन्दी साहित्य अकादमी की स्थापना हुई। ३२ वर्षों में इस संस्था की प्रशस्ति विश्व भर हो चुकी है। इसके वेबसाइट के द्वारा आज इसकी गति-विधि बुलंद है। मुझे इसके संचालन में आनन्द का ही अनुभव है।

आज भी देश में पूर्वकथित अरोचक कार्रवाइयाँ ही सर्वत्र चल रही हैं। राजनैतिक दलबंदी के कारण सामान्य जन-जीवन दूभर हो गया है। शासन सुचारु रूप से चलाना असंभव हो गया है। उन जजों के स्वार्थ मोह एवं अपराधों की कथा रोज सुननी पड़ती है जिनपर पूरा विश्वास अर्पित करना है। शासकों पर भी विश्वास जमता नहीं हैं। व्यभिचार, मारकाट, लूटमार, हत्या की घटनाएं चित्रित करना मात्र पत्रकारिता का धर्म बन चुका है। संक्षेप में अनाचार तथा हत्याकांड की वार्ता सुनाना ही माध्यमों का दाइत्व हो गया। इस दशा में संस्कृति, देशसेवा, कल्याणकार्यों की वार्ता का बिलकुल लोप हो चुका है। सब के मूल में मद्यासक्ति की और उसके सेक्न की सुगमता का वाह-वाह करना ही चाहिए। स्कूल-कालेजों के युवकों को भी यह मादक पदार्थ आसानी से प्राप्त है, ऐसी अवस्था है। किंबहुना शासन की संपत्ति शराब के व्यापार से सुरक्षित है। पर, आश्चर्य यह है कि मद्यपान ही समाज जीवन का ताल खंडित कर देता है। यदि मद्यपान नहीं है तो पुलिस, कचहरी अदालत, कोर्ट तक में कटौती होगी। देश में शांति का कायम होना, जीवन में आनन्द का अनुभव होना, जगत में स्वर्ग का भाव बना रहना कल्पना नहीं होगी, सच्चाई का अनुभव होगा। मद्यपान के विरुद्ध कई बार हम लिख्र चुके हैं।

यथासंभव, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का प्रवर्तन ज़ारी रहना, साहित्य और संस्कृति के प्रचार का एवं देशीय ऐक्य का समर्थन होना है।

इस अकादमी की तरह देश में और भी संस्थाओं का होना अनिवार्य है. पर, इसका बना रहना बिलकुल कष्टसाध्य है। इसे बनाये रख्रने के लिए कई प्रकार के त्यागमय कर्मों का निर्वहण होना है। २६-७-२०१२ को इसका ३२वाँ वार्षिक समारोह चलता है। इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हैं केन्द्र मंत्री श्री. के.सी. वेणुगोपाल जी वे एक महत्वपूर्ण ग्रंथ का लोकार्पण भी करते हैं। वह ग्रंथ है 'केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास'। इस प्रकार का ग्रंथ भारत के अन्य किसी प्रदेश में नहीं लिख्रा गया है। यह ग्रंथ देश के उद्ग्रथन को बल देनेवाला है।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

पाठकीय प्रतिक्रिया

हैदराबाद
१५-६-२०१२

श्रद्धेय आचार्यजी,

सादर प्रणाम।

आपका पत्र मिला और प्रेषित सामग्री भी। मैंने एकांत, (वरेली से निकलती मासिक पत्रिका) के फरवरी १९७६ के अंक में प्रो. नायर व्यक्तित्व और कृतित्व, शीर्षक पर एक लेख प्रकाशित करवाया था। मुझे उसकी प्रति चाही थी। बात यह है मेरे मन में व्यक्ति-सत्ता की चरमोपलब्धि (संस्मरण) शीर्षक पर एक पुस्तक प्रकाशित करने का विचार है। एक ऐसे प्रकाशक से बातचीत नहीं हुई। लगभग १५० पृष्ठों की पुस्तक होगी, तीस लोगों पर केन्द्रित होगी।

आशा है, आप सपरिवार सानंद हैं। शेष कुशल।

भवदीय, कुट्टनपिल्लै एन.पी.

नागपुर
२१-३-२०१२

सेवा में,

संपादक : केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका
सं. डा.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी,

आदरणीय महोदय,

सादर प्रणाम। सेवा में नम्र निदेशन है की, आपकी केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका जनवरी का अवलोकनार्थ हेतू तथा संस्था के वाचनालय (लायब्ररी) के लिए भेजने का कष्ट करेंगे, ऐसी बिनती करता हूँ। कष्ट के लिए क्षमा चाहता हूँ। वत्सल हिन्दी संस्था निरन्तर बत्तीस वर्षों से राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में कार्यरत हैं।

शुभनामनाओं सहीन, भवदीय,

प्रो.डॉ.प्रकाश वि. जीवने, सं. वत्सल हिन्दी संस्था,
१५८, चंडिका नगर-२, मानेवाडा, बेसारोड, नागपुर ४४००२७ (महाराष्ट्र)

हैदराबाद,
१२-७-२०१२

आदरणीय संपादक महोदयजी, नमस्कार

आपकी पत्रिका बहुत उपयोगी है। इस केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका को आप निःशुल्क हमारे विभाग में भेजने को कृपा करें तकि छात्र इनको पढ़ कर उस पत्रिका का ज्ञान प्राप्त कर सके। धन्यवाद।

आपका हितैशी। **डॉ.पतान ऱ़हीम खान, असि.प्रोफसर, हिन्दी विभाग, मौलाना आज़ाद नाशनल उऱ्दू यूनिवेर्सिटी, हैदराबाद**

केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास

(प्रारंभ से सन् २०१२ तक संपूर्ण विवरण)

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

ग्रंथकर्ता - डा.एन.चन्द्रशेखरन नायर

२६-७-२०१२ को केन्द्रमंत्री श्री.के.सी. वेणुगोपाल जी द्वारा लोकार्पित हो रहा है।

केरलीय हिन्दी साहित्य अकादमी के ३२वें वार्षिक सम्मेलन में।

मूल्य १२३.०० प्रकाशक - के.हि.सा.अकादमी, त्रिवेन्द्रम-४

१५० वें जयन्ती वर्ष के अवसर पर युग पुरुष: स्वामी विवेकानन्द

बद्रीनारायण तिवारी

भारत में १० वीं सदी के एक दशक में तीन महान व्यक्ति उत्पन्न हुए स्वामी विवेकानन्द १२ जनवरी १८६३, रवीन्द्रनाथ ठाकुर ७ मई १८६१ और महात्मा गाँधी २ अक्तूबर, १८६९ को भारतीय इतिहास के इस स्वर्णिम दशक में ये तीनों महापुरुष आधुनिक भारत में अपने-अपने क्षेत्र में शलाका पुरुष बने। स्वामी विवेकानन्द के मूल नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। बंगाल के कोलकाता महानगर में उनका जन्म हुआ था। स्वामी विवेकानन्द मात्र ३९ वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने हिन्दू धर्म की सहिष्णुता को एक नया अर्थ दिया।

स्वामी विवेकानन्द धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में, गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने साहित्य में और महात्मा गाँधी ने अंग्रेज़ों से दासता की मुक्ति का स्वाधीनता संग्राम एवं श्वेत-श्याम रंग भेद पर संघर्ष का सूत्रपात किया। इन तीनों महापुरुषों में स्वामी विवेकानन्द ने अपने समय में तथा परवर्ती काल में भारतीय चेतना को सर्वाधिक प्रभावित किया। उन्होंने हिन्दू धर्म की सहिष्णुता को नया अर्थ प्रदान किया। स्वामी विवेकानन्द ने सर्वप्रथम धार्मिक शिक्षा में ईश्वर की सेवा का वास्तविक अर्थ गरीबों की सेवा है। उन्होंने साधुओं-पण्डितों, मन्दिरों-मस्जिदों, गिरजाघरों, गोम्पाओं के इस पारस्परिक विचारों को नकार दिया कि धार्मिक जीवन का उद्देश्य केवल सन्यास के उच्चतर मूल्यों को मोक्ष को पाना है। इसके बजाय उन्होंने निर्धन और दिन-हीन लोगों की निष्काम सेवा पर अधिक जोर दिया। इस प्रत्यक्ष सिद्ध सत्य को एक नया शब्द 'दरिद्र नारायण' दिया यानी ईश्वर का वास्तविक निवास निर्धन और असहाय लोगों में होता है। इस 'दरिद्र नारायण' शब्द ने सभी धार्मिक आस्थावान लोगों में एक कर्तव्य की भावना को जागृत किया, कि ईश्वर की सेवा का अर्थ गरीबों-असहायों की सेवा हैं।

सुप्रसिद्ध गीतकार पद्मश्री गोपालदास नीरज भी स्वामी विवेकानन्द से अत्यक्षिक प्रभावित हो अपनी पंक्तियों में रेखांकित करते हैं

जाँति-पाँति से बड़ा धर्म है,
धर्म-ध्यान से बड़ा कर्म है,
कर्म-काण्ड से बड़ा मर्म है
मगर सभी से बड़ा यहाँ यह
छोटा-सा इन्सान है
और अगर वह प्यार करे तो
धरती स्वर्ग समान है।

इससे भी अधिक स्वामी विवेकानन्द की मूल भावनाओं को नीरज जी की रचना में कितना यथार्थ व्यक्त हो रहा है:

'.... मेरे दुःख दर्द का तुझ पर हो असर कुछ ऐसा
मैं हूँ भूखा तो तुझसे भी न खाया जाए।
जिस्म दो होके भी दिल एक हो अपने ऐसे
मेरा आँसू तेरे पलकों से उठाया जाए।'

स्वामी विवेकानन्द ने वेदान्त दर्शन के गूढ़ सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करने हेतु सर्वप्रथम भारत के सभी भागों में आदर्श शिक्षा तथा चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु 'रामकृष्ण मिशन' जैसी उच्च सेवा भावना की संस्था की स्थापना भी की। इसी मानवता की सेवा को स्वामी विवेकानन्द आध्यात्मिक जीवन का प्रथम सोपान की मान्यता देते थे। उन्होंने विश्व धर्म संसद के आयोजित अमेरिका में शिकागो के सभी धर्मों के शिखरपुरुषों के विश्व सम्मेलन में अद्भुत व्याख्या से प्रभावित किया। धर्म वह वस्तु है जिससे पशु मनुष्य तक और मनुष्य परमात्मा तक उठ सकता है।

वस्तुतः स्वामी विवेकानन्द के योगदान को परस्पर सम्बद्ध तीन आयामों में देखा जाना चाहिए। सर्वप्रथम धर्म को उन्होंने केन्द्रीय स्थान पर प्रतिष्ठापित किया और उसे सर्वथा नया अर्थ दिया यानी 'दरिद्र नारायण' की सेवा ही धर्म का मूल आधार है. दूसरा उन्होंने विभिन्न सम्प्रदायों धर्मों में आपसी सद्भाव पर विशेष जोर दिया। उनकी दृष्टि में तीसरा शिक्षण आज भी पूर्ण रुप से प्रासंगिक है।

स्वामी विवेकानन्द के समकालीन जर्मनी के सुप्रसिद्ध दार्शनिक चिंतक फ्रेडरिक नीत्शे (१८४४-१९००) ने सार्वजनिक घोषणा की थी कि 'ईश्वर मर चुका है'। परवर्ती विचारकों और विद्वान लेखकों ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि अब लोगों को पहले जैसी अभिरुचि नहीं रह गयी है। धर्म से अधिक विज्ञान और बौद्धिकता मानवीय प्रवृत्तियों को संचालित करने में निर्णायक भूमिका निभाती है। यह स्वामी विवेकानन्द को स्वीकार नहीं था, इसलिए उन्होंने धर्म को पूर्णरुपेण नया अर्थ दिया। इसके पूर्ण अतीत में भारत में एक अनीश्वरवादी दर्शन के प्रणेता 'चार्वाक' के उस सिद्धान्त को यहाँ समाज में नकारा गया कि 'खाओ, पियो, मौज करो' न कोई ईश्वर है या स्वर्ग-नरक। इसको समाज ने किसी प्रकार नहीं मान्यता प्रदान की।

गौतम बुद्ध की तरह स्वामी विवेकानन्द ने समाज के आचरण में बौद्धिक चेतना को प्राथमिकता दी। उनका स्पष्ट मत था कि हम पूर्ण रुपेण तर्क सम्मत और युक्ति संगत ही कार्य करें। प्रत्येक व्यक्ति धर्म का ऐसा पथ अपनाए जिसमें स्थायित्व और विश्वसनीयता हो। वह किसी जाति, प्रजाति, समुदाय या धर्म का क्यों न हो प्रत्येक व्यक्ति के बौद्धिक विकास पर जोर दे। कोई भी सम्प्रदाय या धर्म परस्पर शोषण, द्वेष या युद्ध का समर्थन करता हो वह मान्य नहीं हो सकता। इसके विपरीत स्वामी विवेकानन्द सर्वाधिक मान्यता इसी बात पर दिया कि प्रत्येक धर्म निर्धन की सेवा करें और समाज के दलित आशिक्षित लोगों की अज्ञानता, दरिद्रता और रोगियों की चिकित्सा सेवा करें।

इतिहास पुरुष - डॉ.एन.चन्द्रशेखर जी

ड़ॉ.आण्टणी पी.एम.

रचना कालयात्री और जनचरित्री है। (निराला) रचनाकार भोक्ता है, कारयत्री प्रतिभा से युक्त भोक्ता। ऐसे भोक्ता का अनुभव सदा अभिव्यक्ति चाहता है। यह एक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है। अभिव्यक्ति के अनगिनत माध्यम और स्तर होते हैं। अनुभव वस्तुतः वैयक्तिक चेतना है जो निजी क्षमता पर निर्भर है। अभिव्यक्ति तो सामाजिक चेतना से जुड़ी रहती है। इसलिए एक हद तक वह परिभार्जित भी है। यह परिभार्जन अक्सर भद्र, भव्य, सभ्य, शिष्ट आदि शब्दों से जुडा हुआ है। इसका परिणामस्वरूप रूपायित है जीवन मूल्य। ऐसा है तो सभ्य समाज को अपनी सच्चाई का दिग्दर्शन करते सही रास्ता प्रदर्शित करने वाली अभिव्यक्ति अक्षरों के माध्यम से उदात्त जीवन मूल्य प्रदान करने वाली है तो वह उत्तम साहित्य बन जाएगी। बहुआयामी प्रतिभा से धनी ड़ा.एन.चन्द्रशेखरन नायर अपने अनुभवों को शब्दों में बांध कर उचित उपयोगी भतव्य उसमें संगुफित कर आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने वाले सफल, प्रतिष्ठित, निष्ठावान, आदर्श रचनाकार और सर्वादरणीय वरिष्ठ महान व्यक्ति है। इसलिए ही वे 'पुरस्कारों के सम्राट' बन गए हैं।

'नायर जी' नाम से सादर पुकारे जाने वाले डा.चन्द्रशेखर जी का रचना क्षेत्र 'अपारे काव्य संसारे... यथास्मिन रोचते विश्वम् तदेकम् परिवर्तते' कहना सभी मानो में सार्थक है। आपकी पैनी दृष्टि पडे बिना कोई भी सारस्वत मण्डल बचा न पाया है। नायरजी मलयालम भाषी हैं। फिर भी हिन्दी साहित्य में आपकी अनमोल प्रतिष्ठा हो चुकी है। आपकी कारयत्री प्रतिभा सृजनात्मक साहित्य की समस्त शाखाओं, ललित कलाओं, सभ्यता-संस्कृतियों, इतिहास-पुराणों, राजनीति समाषशास्त्र, अनुवाद आदि-आदि मानव के समस्त व्यावहारिक क्षेत्रों से जुडे रहे हैं। अथवा आपकी सार्वभौमिक रचना कुशलता 'ये रत्नहार, लोकोत्तर वर (निराला)' अपनी-अपनी भाषाओं की निजी संपत्ति हो चुकी है।

महज़ हिन्दी ही नहीं मलयालम और अंग्रेज़ी भी नायर जी की रचनात्मक अमूल्य देन से लाभान्वित है। 'रचना युद्ध कौशल है' (निराला) कहना सार्थक बनाते हुए उन्होंने समस्त विषयों पर अपने मौलिक पाण्डित्यपूर्ण विचारों का लोकार्पण किया है; करते रहे हैं; आगे भी करने का आशिर्वाद भगवान उन्हें दे!

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के नेताओं के भाषणों से प्रभावित होकर बालक चन्द्रशेखरन हिन्दी भाषा की ओर आकर्षित हुआ, क्योंकि उन नेताओं की भाषा हिन्दी थी। इस आकर्षण के फलस्वरूप वे हिन्दी में काफी उपाधियाँ प्राप्त कर प्राध्यापक बने। वे निष्टावान आदर्श अध्यापक रह रहे थे। उनके अधीन में आधे दर्जन शोधार्थियों को डॉक्टरल उपाधि भी मिली। अवकाश प्राप्त होने के बाद उनकी क्षमता मानते हुए यू.जी.सी. ने उन्हें 'मेजर रिसर्च फेलो' और बाद में 'एमरिटस प्रोफसर' बना दिया। अध्यापक के रूप में उनकी अपनी क्षमता का और क्या सबूत चाहिए? दक्षिण भारता में हिन्दी के प्रचार के लिए 'शोध पत्रिका' प्रकाशित कर वे उसका संपादन करते आ रहे हैं। समय बीत जाएगा, काल कलिकाल में बदल जाएगा, सुनामी तक हो जाएगा, लेकिन नायर जी का हिन्दी प्रेम स्ताई चिरस्मरणीय रहेगा।

हिन्दी सेवी नायर जी का रचना क्षेत्र सार्वभौमिक है। पिछले सोलह वर्षों तक 'शोध-पत्रिका' का संपादकीय बहुत-से पण्डितों की प्रशंसा का पात्र बहना है। निबन्ध-साहित्य उनके बहुआयामी ज्ञान क्षेत्र का प्रमाण है। 'निबंध-मंजुषा', 'भारतीय साहित्य', 'भारतीय साहित्य और कलाएँ' नामक तीन निबन्ध संग्रह अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। चुने हुए निबन्धों का और संग्रह भी प्रकाशित है। कुलमिलाकर कहें तो उनके निबंध विचारात्मक, मीमांसापरक और सर्वोपरी उदात्त मानवीय गुणों को प्रोत्साहन देनेवाली ज्ञानात्मक रचनाएँ है।

कवि नायर जी भारतीय संस्कृति को उजागर करने वाला राष्ट्रीयवादी है। उनकी चार काव्य रचनाएँ प्रकाशित है - 'हिमालय गरज रहा है', 'कविताएँ देश भक्ति की', 'निषाद शंका', 'चिरंजीत महाकाव्य'। उनकी काव्य रचनाओं में हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा के तहत् उनकी राष्ट्रीय भावना उजागर होती है जो आदर्श भारतीय बनाने की प्रेरणा हमें अवश्य देने वाली हैं। उनके कहानी संग्रह का नाम वह 'चर्चित कहानियाँ' है। कहानीकार नायर जी काफी आशावादी प्रतीत है। साथ ही सामायिक संदर्भों के द्रष्टा भी है। हमारी सांस्कृति की समाजसापेक्ष्य यथार्थ समसामायिकता के आधार पर उन्होंने कहानियों के द्वारा प्रकट किया है। नाटककार नायर जी राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक और भावात्मक एकता का राजदूत प्रतीत है। उनके प्रमुख नाटक हैं- 'त्रिवेणी', 'कुरुक्षेत्र जागता है', 'युग संगम', 'सेवाश्रम', 'देवयानी', 'धर्म और अधर्म' पौराणिकता को समसामयिक जीवन परिवेश से जुडाकर प्रस्तुत करते हुए आदर्श समाज के अनिवार्य गुणों की ओर ये इशारा करने वाले हैं। इससे हमें प्रतीत होता है कि वे नाटक के सफल मर्मज्ञ

१५० वें जयन्ती वर्ष के अवसर पर युग पुरुष: स्वामी विवेकानन्द.....

युग पुरुष स्वामी विवेकानन्द ने शत्रुता या वैमनस्य को दूर करके वेदान्त दर्शन के सिद्धान्तों के 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को, तुलसी के शब्दों में - 'सिया राम मय सब जग जानी' तथा जनसामान्य शब्दों में 'प्रेम की ज्योति जलाते चलो प्रेम की गंगा बहाते चलो' का उद्घोष किया। इसी को साकार रूप देते हुए नया शब्द दिया 'दरिद्र नारायण' यानी ईश्वर का निवास गरीबों और असहाय लोगों में होता है। ईश्वर की वास्तविक सेवा का अर्थ दरिद्र, निर्धन-असहाय लोगों की सेवा को स्वामी विवेकानन्द ने पूजा की मान्यता प्रदान की है।

(आकाशवाणी लखनऊ केन्द्र से १२ जनवरी को प्रसारित)

मानस संगम, महाराज प्रयाग नारायण मदिर (शिवाला), कानपुर नगर २०८००१

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी चित्रण

ड़ॉ. सविता प्रमोद

मैत्रेयी पुष्पा का जन्म ३० नवंबर १९४४ को अलीगढ जिले के सिकुरी गाँव में हुआ था। बचपन उन्होंने झाँसी के निकट बुँदेलखंड के खिल्ली गाँव में बिताया जिस कारण उन्हें बुँदेली और बज्र दोनों भाषाओं का ज्ञान रहा। यद्यपि देर से लिखना आरंभ किया लेकिन अपने कलम के जादू से और निर्भीकता के कारण दस वर्ष के अन्दर जानी-मानी लेखिका बनने का श्रेय इन्हें प्राप्त है। अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत विख्यात समीक्षक प्रोफेसर परमानंद कहते है कि विधा कोई भी हो चाहे उपन्यास या कहानी या आत्मकथा वह विधा न रहकर प्रतिरोध और विमर्ष का उत्तेजक और गंभीर आख्यान बनाकर इस रोचकता के साथ मैत्रेयी प्रस्तुत करती है कि वह बेहद पठनीय बन जाता है।

अनादि काल से नारी चित्रण और अवलोकन होता आ रहा है। पुरुषों के द्वारा भी इस ओर अथक प्रयास रहा है लेकिन इनके लिए नारीत्व केवल अनुमान है, नारी के लिए अनुभव। जो पीडा नारी ने भोगी है, उसे वही सार्थक अभिव्यक्ति दे सकती है, इस कारण वह अधिक यथार्थ बन बैठता है आदर्श नहीं।

मैत्रेयी पुष्पा ने नारी विमर्श द्वारा उन पर हुए अत्याचार और उसकी स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष को दर्शाया है लेकिन इसका उद्देश इस स्थिति पर आँसू बहाना न होकर उन कारणों की खोज से है जो स्त्री की इस स्थिति के लिए जिम्मेदार है। समकालीन लेखिकाओं में उषा प्रियंवदा के पच्चपन खंभे लाल दीवार, रोकेगी नहीं राधिका, मन्नू भंडारी का अपका बंटी, हिस्से की धूप और कठगुलाब, ममता कालिया का बेघर, मैत्रेयी पुष्पा का इदन्नमम, चाक और उल्मा कबूतरी में स्त्री विमर्श को सुचारित रुप में कथा साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। इन लेखिकाओं ने नारी विमर्श को केन्द्र में रखकर नारी को अपने पक्ष में खुद लडने और खुद खडे होने का अह्वान दिया है क्योंकि उनका पूर्ण विश्वास है कि जब तक यह लडाई नारी की ओर से नहीं लडी जाएगी तब तक उनके पक्ष में नहीं जाएगी।

आज के इस युग में यह भूला नहीं जा सकता कि नारी विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाने में सक्षम है। लेकिन दुख की बात यह है कि यह कथन केवल नगर या महानगर की नारियों के संदर्भ में ही उचित कहा जा सकता है। भारत में आज भी ऐसे अनेक गाँव है जहाँ निरक्षरता, आर्थिक परवशता, रुढिवादिता, आदि नारी की प्रगति में बाधक बन बैठे है। वह चारदीवारी में रहकर भारतीय परंपराओं का निर्वाह कर रही है। अर्थात पूर्णतः शोषण की मध्ययुगीन परंपरा से मुक्त नहीं हो पाई है। मैत्रेयी बताना चाहती है कि गाँव की स्त्री क्या और कैसा सोचती है? वे ग्रामीण स्त्रीयों की अनुभवजन्य विवेकशीलता को चित्रित करती है।

वास्तविकता यह है कि पुरुष प्रधाकन समाज में नारियों को चाहे वह गाँव में रहे या शहरों में कई कठिनाइयों का सामना करना पडता है। गाँव के जीवन से चिरपरिचित मैत्रेयी पुष्पा ने अपने कलम द्वारा स्त्री के प्रति होनेवाले शोषण के खिलाफ संघर्ष घोषित किया है। डॉ. शोभा यशवंते के अनुसार मैत्रेयी पुष्पा के लेखन मेकं पुरुष समाज द्वारा स्त्री पर होने वाले अत्याचारों का अंकन है। इदन्नमम, चाक, झूलानट, अल्मा कबूतरी, कस्तूरी कुंडल बसै आदि के माध्यम से पुरुष समाज द्वारा बनायी गई नैतिक संहिताओं में जकडी नारी की नियति का बेजोड

इतिहास पुरुष - डॉ.एन.चन्द्रशेखर जी....

हैं। नायर जी की सूक्ष्मनिरीक्षण शक्ति का परिचायक है अपने एकांकी नाटक। उनके एकांकी संग्रह है - 'धर्म और अधर्म'। इसमें संकलित एकांकियों की मूल भावना मानवीयता का भारतीय आधार है। अथवा भारतीयता ही नायर जी की दृष्टि में आदर्श मानवीयता है। नायर जी के अनुवाद क्षेत्र असीम है। साथ-ही-साथ अंग्रेज़ी और मलयालम में भी काफी मौलिक रचनाएं प्रस्तुत कर उन भाषाओं के साहित्य मण्डल का श्रीवर्धन भी उन्होंने किया है। हिन्दी, मलयालम, अंग्रेज़ी और संस्कृत भाषाओं पर उनका गहरा अधिकार प्राप्त है। इस क्षेत्र में वे बहुभाषा विज्ञ है। चित्रकला वे स्वयं करते हैं, साथ ही कला विमर्शन भी निभाते हैं। इसलिए वे सुकुमार कलाओं का मर्मज्ञ मालूम होते हैं।

बहुत-से मंत्रालयों, परिषदों, समितियों, सामाजिक-सांस्कृतिक-शैक्षिक संस्थाओं में वे वरिष्ठ सदस्या रह चुके हैं। उनकी मौजूदगी से ही ये सब सम्मानित भी हुए हैं। नायर जी के बारे में विष्णु प्रभाकर का प्रमाणीकरण है - 'मनुष्य की पीडा को स्वर देने में नायरजी की अटपटी लेखनी ने कोई कृपणता नहीं का है'। डॉ.विजयेन्द्र स्नातक - 'श्री. नायर सच्चे अर्थ में हिन्दी भाषा के गौरवशाली वकील है'। डॉ. गोपाल जी भटनागर 'भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल आदर्शों का प्रतिफलन नायर जी की रचनाओं में हुआ है। ....उनका लेखन समूचे भारत को लेकर चलता है'। श्री. विजयकुमार विद्रोही - 'भारत के मानव प्रेमी ऋषि, मुनि व आचार्य की पथगामी नायर जी'। डॉ. मंगल प्रसाद - 'बहुमुखी प्रतिभा से धनी और मलयालम, हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं के प्रकाण्ड पंडित डॉ.नायर'। ड़ॉ.विश्णुदत्त राकेश - 'डॉ.नायर का भास्वर व्यक्तित्व नक्षत्र की तरह आलोकित होता हुआ दिखाई देता है'। कतिपय क्षेत्रों के लोगों, भाषा भाषियों के प्रभाणीकरण के सामने मुझ जैसे लघु मानव का वक्तव्य नगाडे के यहाँ तूती की आवाज़ होगा, या ऊँट के भूँह जीरा। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी मेरे समस्त जीवनानुभव के परे के अतिमानव प्रतीत हैं।

सेंट जॉसफ्स कॉलेज, देवगिरी, कोषिक्कोड-८

चित्र प्रस्तुत करती है।[३] उनके पात्र परंपरागत पहचान को तोडते है और नए समय से जुडना चाहते है।

उन्होंने अपने उपन्यासों में मानसिक शोषण, विधवा पुनर्विवाह, बलात्कार, वेश्या जीवन की समस्या, कुँवारी लडकी की समस्या आदि को कभी न ख़त्म होने वाली कहानी द्वारा प्रस्तुत किया है।

पुरुष प्रधान समाज में स्त्री पुरुतष दोनों यदि एक समान नीच कार्य करे तो स्त्री निन्दनीय दृष्टि से देख्री जाती है और पुरुष सही माना जाता है या ख़ास आसर नहीं पडता। वह जितनी चाहे उतनी शादियाँ कर सकता है, बिना विवाह के किसी स्त्री के साथ रह सकता है लेकिन स्त्रियों को मर्यादा, परंपरा, ख़ानदान आदि के नाम पर अपनी हर इच्छाओं का दमन करना पडता है। पुरुष प्रधान समाज हमेशा स्त्री से निरंतर पतिव्रत धर्म की अपेक्षा करता है। यदि स्त्री इन बंधनों को तोडने का प्रयास करे तो उसका मुँह काला कर दिया जाता है। मन्दाकिनी (इदन्नमम) की माँ प्रेम ने अपने पति महेन्दर की हत्या के बाद अपने अधेड उम्र जीजा रतन यादव से विवाह कर लिया जिसके सभी विरोधी हैं। स्त्री पर मुग्ध पुरुष उसे निचोड कर उसी तरह फेंक देता है जिस तरह गन्ने का रस निकाल कर उसे फेंका जाता है। रतन यादव पर विश्वास कर प्रेमा अपनी बच्ची मन्दा को बुख़ार में तपता छोड़कर उसके साथ निकल पडती है लेकिन वह उसका दैहिक और आर्थिक शोषण करने में तुला रहता है। उसकी समस्त जमीन बेचकर किसी बूढे के हाथ बेचने तक गिरता है। इस तरह उसकी दशा अत्यधिक दयनीय बना देता है। रेशम (चाक) अपने पति के मृत्यु के पाँच महीने पश्चात गर्भवती हो जाती है। अपने द्वारा उठाया कदम न ही उसे गलत लगता है, उल्टे वह अपना विद्रोही स्वभाव प्रकट कर बैठती है। स्त्री जब अपने हक के बारे में विचार-विमर्श करती है तब उसे समाज से ख़री-ख़ोटी सुननी पडती है। रेशम मनुष्य होने के नाते देह की जो आवश्यकता है उसे पूरा करना जरूरी समझती है। वह अपनी सास से कहती है - माइयों तुम मेरे पीछे क्यों पड गई हो। मेरे चालचलन की झंडी फहराना जरूरी है? बिरथा ही छानबीन करने में लगी हो। आल को तुम्हारा बेटा मेरी जगह होता तो पूछती कि किसके संग सोया था? अब उसकी बॉह गह ले मेरे मरे पीछे तेरहीं तक का भी सबर न करता और ले आता दूसरी। तुम ख़ुश हो रही होती कि पूत की उजडी जिन्दगी बस गई। पर मेरा फजीता करने पर तुली हो।[४] लेकिन रेशम के विचारों को कौन पूछता है? उसे क्या अधिकार कि वह अपने बारे में सोचे? कोई उसे कितना बर्दास्त करता? उसका विद्रोह अधिक समय तक न चल सका और आख़िर बदचलनी के नाम पर छल से जिन्दा जलायी जाती है, जेठ डोरिया उसकी हत्या कर देता है। उसका सारा विद्रोह एक चीख़ में समा जाता है।

स्री हमेशा अपने परिवार से जुडे रहना चाहती है इस कारण कई बार घुटन और तनाव रूपी विष पीकर रह जाती है। अपने संस्कार को बनाए रख़ने का प्रयत्न करती है। विज़न उपन्यास में नेहा द्वारा इस प्रकार के कुंठा औरप घुटन की ओर संकेत है। जब उसे पता चलता है कि उसका शोषणा हो रहा है तो गृहस्थ जीवन त्यागना चाहती है लेकिन संस्कार, पारिवारिक परंपरा, रुढियों और परंपराओं की बेडियाँ उसे ऐसा जकडती है कि वह अशान्त स्थिति में भी शान्त बनी रहती है। बेतवा बहती रही इस शीर्षक में भी मैत्रेयी ने जो संमर्पकता दिख्राई है वह यह है कि नदी जिस प्रकार बहते हुए गंदगी को साफ करती हुई चलती है, आगे बढती है, उसी प्रकार स्त्री भी जीवन में दुख़ों को और गलत विचारों को छोडकर अच्छे विचारों का रोपण करके आगे बढती है।

पुरुष अपने काम दाह को तृप्त करने बलात्कार भी कर मूँछे ताने समाज में विचरणा कर सकता है पर उस स्थिति में स्त्रियों के मुँह पर गोबर पोता जाता है। वह समाज में मूँह दिख्राने लायक नहीं रह जाती। आज भी बलात्कारी स्त्री के प्रति समाज का दृष्टिकोण हीन है। जिसने यह कुकर्म करके स्त्री जीवन बरबाद किया उसे दोषी मानने की अपेक्षा स्त्री को दोषी माना जाता है। वह स्त्री भी स्वयं को दोषी मानने लगती है. इदन्नमम उपन्यास की मन्दा कैलाश मास्टर के वासना का शिकार बन अपने आप को दोषी मानकर अपराध भाव से ग्रस्त हो जाती है।

मैत्रेयी पुष्पा ने बलात्कारी स्त्री की पीडी पर प्रकाश डाला है। मन्दाकिनी (इदन्नमम) दाता की सुरक्षा में होने के बावजूद एक ओर बलात्कार का शिकार होती है तो दूसरी ओर कैलाश मास्टर की वासना का शिकार बनती है। इस तरह शारीरिक और मानसिक धरातल पर पूरी तरह टूट जाती है। सगुना (इदन्नमम) के पिता जगेसर अपनी अय्याशी के लिए अहिल्या (वेश्या स्त्री) के साथ संबंध स्थापित करता है लेकिन जब व वेश्या जीवन के कारण बीमार हो जाती है तब गन्दी-गन्दी गालियाँ देकर तडपता छोडकर चला जाता है। जगेसर का मित्र अभिलाख़ सिंह सगुना को पुत्रवधु के रूप में स्वीकार करने को तैयार हो जाता है लेकिन वासना के नशे में अंधा होकर उससे बलात्कार कर भैठता है। बालात्कार का शिकार होने का पश्चात वह मानसिक रूप से पूरी तरह टूट जाती है और आत्महत्या के सिवाय कोई और चारा नहीं देख़ पाती। सगुना अपने प्रति हुए जुल्म का बदला हत्या और आत्मरहत्या कर चुकाती है। अल्मा-कबूतरी में भी लेख़िका ने बलात्कार समस्या को उभारा है। एक ओर मसाराम को धोख़े से कदमबाई का देह हासिल करते दिख़ाया है तो दूसरी ओर सूरजभान द्वारा बलात्कार करते।

स्त्रियाँ भी उतनी कमजोर नहीं होती जितनी मानी जाती है या सिख़ायी जाती है। अगर वह अपने मन में कुछ ठान ले तो फिर उसका सामना पुरुष नहीकं कर सकता, उसे अबला कहकर संबोधित करना मिथ्या है। सभ्यता के आरंभिक कालों में स्त्रियाँ शारीरिक बल में भी पुरुषों से आगे थी। आगे बढने की होड और ईष्या की भावना से पुरुषों ने स्त्रियों को आगे बढने से रोका। जब मन्दा का मुकाबला अभिलाख़सिंह जेसे लोगों से होता है तब उने घिनौने हथकण्डों का शिकार भी होना पडता है। राजनीति के नए आयामों से भी वह परिचित होती हैं। लेकिन इस तरह के घटनाओं से मन्दा का दिल नहीं टूटता उल्टे वह अति मजबूत हो जाती है। डॉ शोभा यशवंते के अनुसार मैत्रेयी के उपन्यासों में जन्म पाने वाली नारियाँ नारी समस्या की समस्त मान्यताओं को चुनौती देने लगती हैं। उस धर्म, दर्शन, चिंतन समाज के विरुद्ध ख़डी होती है जो उसको दबाए रख़ना चाहती है।[५] प्रो. विजयबहादुर सिंह मानते है कि मैत्रेयी का रचना कर्म स्त्री के हिस्से का लोकतंत्र माँगता है।

राजेन्द्र परदेसी का परिचयवृत्त

नाम - राजेन्द्र परदेसी, भोजपुर (बिहार)
शिक्षा - ए.एस.आई.ई., विशारद, डी.लिट् (मानद)
पेशा - विद्युत अभियन्ता
प्रकाशित कृति - हताश होने से पहले (कविता-संग्रह), शब्दशिल्पियों के सान्निध्य में (साक्षात्कार-संग्रह), दूर होता गाँव (लघुकथा-संग्रह), शब्दों के संधान (हाइकु-संग्रह), दूर होते रिश्ते (कहानी-संग्रह), भोजपुरी लोककथाएँ (प्रकाशन विभाग, भारत सरकार), सृजन के पथिक (निबंध संग्रह)
प्रकाशनाधीन कृति - धरती पर आकाश (कविता-संग्रह), सफलता का रहस्य (व्यंग्य-संग्रह), भविष्य का संकल्प (बाल कहानी-संग्रह), प्रश्नों की प्रतिध्यवनि (साक्षात्कार-संग्रह)
फिल्म पटकथा - सांचि पिरितिया हमार (प्रदर्शित भोजपुरी फिल्म)
देश के अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रचना प्रकाशन, अनेक संस्थाओं के सात संपर्क।
निम्नांकित सम्मान-एवं पुरस्कार प्राप्त - विद्यावाचस्पति, साहित्य श्री, लघुकथा-मार्तण्ड (बेगूसराय), साहित्य-शिरोमणि (पटना), साहित्य-सम्राट (बैतूल), सम्मान पत्र (लखलऊ), सम्मान पत्र (बस्ती), शिखर सम्मान (समस्लीपुर, बिहार), विशेष अकादमी सम्मान (जालंधर, पंजाब)। पाठ्यक्रम में ग्रंथ आये हैं।
संपर्क : भारतीय पब्लिक अकादमी, चांदन रोड, फरीदी नगर, लखनऊ 226015. Mobile: 09415045584

मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी चित्रण...

मन्दा विशिष्ट उद्देश्य से प्रेरित है और उसमें अपार संगठन शक्ति है, अपने इसी शक्ति के सहारे वह व्यवस्था के साथ टक्कर लेती है। जो मन्दा फ्राक पहने उपन्यास में उपस्थित होती है, वह मन्दा आगे चलकर समस्त गाँव के फैसलों को लेती दिखाई देती है।[२] मन्दा एक मामूली लडकी है, जो हर जगह शोषण का शिकार बनती है। पश्चात इसके विरुद्ध खडी होती है और हर शोषण का समाधान निकालने का प्रयास करती है। सुधीराजी के अनुसार सोनपुरा में मन्दा की स्थिति बहुत कुछ ऐसी है जैसी दक्षिण में युवा गाँधी की रही होगी। उसके संघर्ष में कुसुमा, सगुना जैसी औरतें उसके साथ है। रतन यादव से लडकर प्रेम द्वारा रुपयों का हासिल करना भी इसका सबूत है कि प्रेम के आगे यद्यपि नारियाँ घुटने टेक देती हैं लेकिन कमजोर नहीं है। कुसुम का सुधारवादी विचारधारा इसे उजागर करता है। मदा, सारंग, कदमबाई बनी बनाई कसौटियों को तोडने या उन पर स्वयं कसने के तनाव भरे द्वन्दव से मुक्त होकर समाज में अपनी पहचान बना जाती है।[३] झूलानट उपन्यास की शीलो एक ऐसी महिला है जो अपने अधिकारों के प्रति सजग है। उसके अनुसार अधिकार माँगना किसी पर अन्याय नहीं। राजेन्द्र यादवजी के अनुसार बेहद आत्मीय, पारिवारिक सहजता के साथ मैत्रेयी ने इस जटिल कहानी की नायिका शीलो और उसकी स्त्री-शक्ति को फोकस किया है।[६]

मैत्रेयी ने नारी को निस्वार्थ सेवा और त्याग की प्रतिमूर्ति के रुप में भी चित्रित किया है। मन्दा गाँव में अस्पताल लाने, डॉक्टर की नियुक्ति आदि सामाजिक कार्यों में पूर्णरुप से जुडी रहती है। जीवन भर जिसके इन्तजार में रहती है उसे प्राप्त होने का क्षण जब निकट आता है तब भाग्य उसका हाथ छोड नया रुप ग्रहण कर लेती है। सगुना की माँ को अभिलाख की हत्या में पुलिस पकडकर ले जाती है तब मन्दा अपने बारे में न सोच सगुना की माँ को जमानत पर छुड़वाने के लिए रवाना हो जाती है।

स्त्री बनना एक शाप सा माना जाता है। समाज में आत्मसम्मान प्राप्त करने के लिए अथक परिश्रम करना पडता है। अब भी इस स्थिति पर अवलोकन न किया जाए, इसके विरुद्ध आवाज न उठाया जाए तो अनर्थ हो जाएगा। मैत्रेयीजी ने चाक के आमुख में इस प्रकार कहा है-

पर सुन मेरी बच्ची! अपनी कटी हुई हथेलियाँ न फैलाया, उस बनाने वाले के सामने कि पिछली बार बनाते समय जो भूल की थी उसे सुधार ले! नहीं तुझे फिर वही बनना है! फिर-फिर औरत! सौ जन्मों तक औरत! तब तक औरत जब तक मेरे हिस्से का आसमान तेरे और सिर्फ तेरे नाम न कर दिया जाय।

लकीरों से लेकर खुली खिडिकियाँ, सुनो मालिक सुनो तक उन्होंने जो साहित्य लेखन की यात्रा की है उनमें नारी की केन्द्रबिन्दु है। मैत्रेयी के उपन्यासों की विशेषता यह है कि उन्होंने नारी के जीवन के बारे में समस्याओं का उद्घाटन करने के साथ-साथ समाधान भी बताया है। कोई आत्म कबूतरी की तरह हर मुसीबत को लाँघकर बबीना मतदार संघ केलिए प्रत्याशी के रूप में मिल जाती है तो चाक की सारंग कुछ ढालकर नया बनाती है। दया दीक्षित के अनुसार मैत्रेयी ने स्त्री को संघर्ष के रास्ते गुजारा है, उनके यहाँ पलायन के लिए जगह नहीं। गंवाई औरतें अपनी ही जगह खडी रहकर लडती है. उन्होंने जन्मजात अपराधियों पर अल्मा कबूतरी उपन्यास लिखकर शिक्षित और सभ्य समाज को यह सोचने पर विचार हि की आखिर वे कितने सभ्य है?

नारी चित्रण और विमर्श उनके रचनाओं में यद्यपि खासकर देखने को मिलता है तथापि उन्होंने पुरुष की अवहेलना नहीं की है। पुरुष को सखा, गुरु, पथ-प्रदर्शक, सहचर आदि रूपों में भी देखा है।

१. अल्मा कबूतरी-मैत्रेयी पुष्पा; २. स्त्रीवाद और महिला उपन्यासकार-डॉ. वैशाली देशपांडे; ३. मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी जीवन-डॉ शोभा यशवंते; ४. मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी जीवन-डॉ.शोभा यशवंते; ५. मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में नारी जीवन-डॉ.शोभा यशवंते; ६. कहानी स्वरुप और संवेदना-राजेन्द्र यादव ●

समकालीन नारी का राजनैतिक अवबोध - उपन्यास लेखिकाओं की दृष्टिकोण में

ड़ॉ. टी.श्रीदेवी

राजनीति, समाज, शिक्षा, विज्ञान एवं साहितय के क्षेत्रों में स्त्रियों ने अपनी योग्यता प्रमाणित की है। नारी का युग सापेक्ष बदलाव साहित्य में भी प्रतिध्वनित होना स्वाभाविक है। महात्मागाँधी के नेदृत्व में जनवादी आन्दोलन की अवधी में महिलाओं को समाज में अपना कुछ भूमिका मिली। श्रीमती इन्दिरागाँधी ने पूरे अठारहसाल तक देश के नेतृत्व किया। उसमें नारी का शक्तिशाली राजनैतिक रूप हमने देख्र लिया। अनेक महिलाओं ने मुख्यमंत्री पद की आभा बढाई। राज्यपाल के रूप में मंत्रिमंडल के सदस्य के रूप में अनेक महिलायें शामिल हो गये।

लेकिन विडंबना की बात यह है कि वहाँ से लेकर अब तक देख्रे तो नारियों की सख्यं की और राजनीति में उनकी शक्ति की कमी हाती जा रही है। शिक्षा को यहाँ तक बाधा हम नहीं कह सकते क्योंकि कम शिक्षित और अशिक्षित पुरुष भी राजनीति में दिख्राई पडते है। महिलाओं की प्रस्तुत डालन का कारण सिर्फ पुरुष ही जिम्मेदार नहीं है स्त्री भी जिम्मेदार है। महिला शाक्तीकरण के लिए भेदभाव के विचारों, विख्रासों और दृष्टिकोणों से बनाए रख्रे विचारधारा को बदलना होगा। चिसमें शक्ति है, पूँजी हैं और अधिकार है शब्द का बागिडोंर उसमें होना स्वाभाविक है।

स्त्री और पुरुष एक नहीं है। अलग-अलग विचार, शारीरिक गठन और वैचारिकता आदि, उनमें है। सुदृढ सामाजिक गठन केलिए नारी में सौ प्रातिशत नारी सहज योग्यतायें और पुरुष में सौ प्रतिशत सहज योग्यतायें होना अनुवार्य है। हर एक को उचित स्थान देना और व्यक्ति मूल्य के आधार पर तौलना समीचीन लगता है। सिन्धू छाटी की सभ्यता से लेकर वैदिक काल से होकर उत्तर वैदिक काल तक भारत इस प्रकार की संस्कृति में रख्रने वाला देश है। लेकिन उत्तर वैदिक काल से होकर स्त्रियों की दशा में गिरवट आने लगी मौर्य युग से राजपूत युग तक नारी का कार्य क्षेत्र केवल धर की चहर दिवारी तक सीमित रहा। उच्चवर्ग की नारियाँ शिक्षा प्राप्त कर सकती थी। मध्य युग के दासप्रथा के विकास रूप के कारण अधिकतर नारियाँ शिक्षा से वंचित रहती थी। आज्ञान अंधविख्रास आदि के कारण नारी का पतन परिपूर्ण हो गया।

इन सभी परिस्थितियों के बीच उच्चवर्ग के कुछ महिलायें साहित्य राजनीती और धार्मिक समितियों के बीच सुशोभित करते थे। महाकाव्य काल की कुन्ती, देवयानी, द्रौपदी, उत्तरा, सीता, मध्ययुग के पद्मावती, मीराभाई, देवल राणी रूपवती, वैदिक युग के गार्गी, मैत्रेयी, मुगलशासक परिवारों के चाँद बीबी, नूरजहाँ, मुमताज़ आदि उपादान है।

साहित्य की सशक्त विधा उपन्यास में विशेष नारी समाज का आधुतिक युग-बोध निरिचत रूप से पाया जाता है। समकालीन उपन्यास साहित्य में विशेष राजनेतिक दृष्टिकोण अपनाते हुए अनेक महिला उपन्यासकार हमारे सामने आ गयी है। इनकी तूलिका से अनेक साहसी एवं दृद व्यक्तित्ववाली नारियाँ हमारे बीच प्रशोभित जी रही है। ये अल्वसंख्यक होती है तो भी शक्तिशाली है। मालती परुलकर एक ऐसी लेख्रिका है जिनकी लेख्रनी से सशक्त राजनैतिक अवबोधवाली नारियाँ हमारे पास आ बैठती है। उनकी जहाँ पौ फटनेवाली उपन्यास की देव की माँ शक्तिशाली राजनैतिक अवबोध रख्रनेवाली है - "अभी तक दबी-दबी रहनेवाली माँ में एकाएक फुर्ती और निर्णय शक्ति का उदय हुआ.... हीन ग्रन्थयों से दबी और सहमी माँ की संकीर्णता का, वृहद विरतृतीकरण सुभगाबाई की प्रेरण स्वरूप, राजनीतिक-क्षेत्र में आने पर होता है। माँ प्रचडं मतों से जीतकर संसद सदस्या बनी"।[१] माँ सवात्विक और आदरमियी लेकिन अशिक्षित है। अशिक्षा उनकेलिए एक बाधा नहीं है। ज़रूरत पडने पर वह स्वयं अपनी शक्ति को ढूंढ निकालती और आगे बढती है। प्रस्तुत नारी पात्र द्वारा लेख्रिका यह कहना चाहती है कि अशिक्षा राजनीति के क्षेत्र में नारियों केलिए एक बाधा नहीं है।

'जहाँ पौ फटने वाली है' की नायिकं कहती है - "दलित नेताओं का उनके सामर्थ्य के अनुसार स्वागत करने की सिवाय एवं खूद अपने दलित परिवार के पालन करने का औदार्य व्यक्त करने के सिवाय बब्बा ने पूरी उम्र में हरिजनों केलिए कुछ नहीं किया"।[२] यहाँ सत्ता का मोह और उनके विरुद्ध आवज़ उठानेवाली स्त्री का रूप ख्ररा उतरता है।

क्रांति त्रिवेदी का उपन्यास "फुलों की सपना" की नायिका द्वारा नारी का नेतृत्व गुण की ओर लेख्रिका हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। अच्छा भाषण राजनैतिक नेताओं का अवश्य गुण है। यहाँ शिल्पा भीड में बोलनेवाली, भीड को संभालनेवाली पद के दायित्वों को निभानेवाली सराक्त नेता के रूप में आती है और पाठकों को मुग्ध करती है।

वास्तव में भारत की राजनीति इसलिए संकट और गतिरंध का शिकार बनती है कि नेतागण, राजनैतिक स्थान और शान के पीछे जानेवाला है। यहाँ समकालीन उपन्यास लेख्रिकायें नारी की राष्ट्रीयबोध, चेतना और अस्मिता की ओर ध्यान खींचती है। मन्नु भण्डारी के 'महाभेज' उपन्यास शासन पद का नहीं जनता की एकता और शक्ति में जोर करते हुए आता है - "इस बात को देख्र लिया सबने कि जनता की एकता में बडा जोर है तुफानी जोर तूफान आता है तो बडे बडे राज्य उल्ट देता है"।

प्रतिभाराय की 'द्रौपदी' की कृष्णा बडी सूक्ष्मदर्श एवं साहसी नारी है उनके अनुसार - "सारी के सम्मान की रक्षा करना राजधर्म है फिर अपने वंश की कुलवधू की अमर्यादा करना क्या कुरु राजओं को शोभा देता है? ....नारी हृदय कोमल-ज़रूर, दुर्बल नहीं"। नारी की उसका सहज स्वरूप है वही कोमलता परिवार में समाज में और राष्ट्र में उसकी

मेहरुन्निसा परवेजः व्यक्तित्व और कृतित्व का संबन्ध

ड़ॉ. मिनी सामुवेल

लेखक अपने समय, परिवेश और जीवन को अपने साहित्य में प्रतिफलित करते हैं। पाठकों को अपने समय के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आदि परिवेशों से अवगत कराते हैं। समाज के विभन्न पहलुओं के चित्र को हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं। साठोत्तर कथाकारों ने भोगे हुए यथार्थ, अनुभवों की प्रामाणिकता तथा निजि अनुभूतियों के आधार पर अपने साहित्य का निर्माण किया है। कन् १९५०-६० के पश्चात महिला कथाकारों ने अपने अप्रतिम सृजन प्रतिभा का परिचय दिया है। स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में लेखिकाएँ कथामंच पर उपस्थित हुई है। स्त्री सुलभ सीमाओं के परे इनके लेखकीय परिदृश्य भी वही थे जो उस समय के शेष लेखकीय परिदृश्य से जुडे लोगों का था।

लेखकीय प्रतिभाएँ समाज को देखकर विकसित होता है। जीवनानुभवों का अंश उनके रचनाओं में उतरता है। अतः लेखक के जीवन को उनके रचनाओं से बाहर निकलकर नहीं देखा जा सकता है। श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज का जन्म १० दिसंबर १९४४ की धुंधलंकी शाम में वैनगंगा नदी, गोंदिया, महाराष्ट्र को पार करते वक्त वैलगाडी में हुआ है। इसलिए घर के सदस्य उन्हें नदिया के नाम से जानते हैं। इतिहास प्रसिद्ध मुगल शासन काल की नूरजहाँ, मेहरुन्निसा, का जन्म भी यात्रा के दौरान हुआ था जन्म घटनाओं की समानताओं के कारण गाँव के मौलाना ने उनका नाम भी मेरुन्निसा रखा।

मेहरुन्निसा परवेज जी के पिता, श्री. ए.एच.खान उच्च शिक्षा प्राप्त प्रशासनिक विभाग के अधिकारी थे। पिता काबुल पठान और माँ, श्रीमती शहजादी बेगम मुगल घराने से थी। उनकी ददिहाल मध्यप्रदेश के बहेला बालाघाट गाँव में है और ननिहाल महाराष्ट्र के गोंदिया नागपूर में है। अपने प्रगतिशील विचारधाराओं के कारण पिता ने पर्दा प्रथा और धार्मिक कट्टरपन का विरोध किया। पिता के रहन सहन और आचरण व्यवहार पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित थे इसलिए सामन्तवादी मुसलम परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी नदिया ने धार्मि का बाह्यडम्बरों को प्रधानता नहीकं दी। अपने अपने लोग कहानी में उन्होंने अपने बचपन के परिवेश को बाँधा है।

मेहरुन्निसा परवेज जी के बचपन को सुखद नहीं कहा जा सकता है। माता पिता के वैचारिक भिन्नता के कारण घर में तनावपूर्ण स्थिति बनी रहती थी। इससे उनके बाल हृदय में आशंका और भय ने स्थायी रुप धारण कर लिया था। बचपन से बिमार रहने के कारण मौत के आतंक ने उन्हें घेर लिया था। इस भय को उन्होंने आतंक भरा सुख और सलाखों में फंसा आकाश कहानियों में उजागर किया है। पिता का प्रशासनिक विभाग में कार्यारत होने के कारण लेखिका को कई शहरों में रहने का अवसर प्राप्त हुआ है। लेकिन मुख्यतः उनका बचपन बस्तर के आदिवासियों के बीच गुजरा इसलिए वहां की जीवन शैली रीति रिवाज और समस्याओं को उन्होंने अपने कथा साहित्य में उजागर किया है।

किशोरावस्था पार करने से पूर्व ही मेहरुन्निसा जी वैवाहिक जीवन में बंध गयी। उनका विवाह ३० अक्तूबर १९५९ पन्द्रह वर्ष की उम्र में

शोभा बढाती है। लेकिन उसको दुर्बल नहीं समझना। अपने विरुद्ध दुराचार करनेवाले सभी पुरुषों के संम्मुख लेखिका राजनैतिक अवबोध वाली कृष्णा द्वारा आवाज़ उठाती है। और चेतावनी देती है।

'मीनरे' राशिप्रभाशास्त्री की एक सफल राजनैतिक उपन्यास है। इसकी नायिका प्रेमा दिवान एक सफल राजनीतिज्ञ के रूप में प्रशोभित है। प्रेमा किसी राजनैतिक दल का सदस्य नहीं है और राजनीति में कोई स्थान भी नहीं है। इन सबके बिना भी उन्होंने राष्ट्र की भलाई के लिए कुछ किया। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रेमा दिवान को अपनी संस्था के कार्यो में अल्पशिक्षक व्यवस्थापकों का अनावश्यक हस्तक्षेप पीडा पहूँचाता है। छात्र नेताओं और व्यवस्थापकों के बीच कई परिस्थिति में वह विवश हो उठती है। वास्तव में आगामी पीढी के दिग्दर्शन करानेवाले इस महाविद्यालय के विरुद्ध होनेवाले तरीकों के प्रति स्वार्थी देशद्रौहियों के प्रति प्रेमा नफरत व्यक्त करती है - "तुम ईट, पत्थर - सीमेंट लकडी का व्यापार करनेवाले, इन संस्थाओं में तुम घुसते ही क्यों हो? शिक्षा संस्थाओं पर राज करने का हक तुम्हें किसने दिया? कालाधन बनानेवाले तुम स्मगलर्य.... तुम जिनके पास चाँदी सोने के टुकडे है... तुम चाहते हो बुद्धिजीवी लोग तुम्हारी जो हजूरी करें"।[५] किसी राजनैतिक दलों की सहायता बिना यहाँ पेरमादिवान आगामी पीडी का दिग्दर्शन कराती है और राष्ट्रसेवा करती है। सच्ची राजनीती यही है। इस प्रकार की नारियों को 'रोलमोडल' बनेगा तो भारत की राजनैतिक भविष्य बलशाली होगा। आज की राजनीति सिर्फ वर्तमान पीढी को ही नहीं, आगामी पीढी को भी भ्रष्टाचार का अड्डा बनेगा। नयी पीढी का नमूना बनाने केलिए यहाँ कोई भी नेता नहीं है।

इस अवसर पर समकालीन उपन्यास लेखिकाओं के तीखे राजनैतिक भाव बोध वाले नारी पात्र बुलन्द आवाज़ उठाकर पाठकों के सामने आते है। जिनको देखकर ऐसा लगता है हमारे राष्ट्र के राजनैतिक नेताओं के पद के लिए ये ही सर्वधा योग्य है और इनके हाथों में भारत की राजनैतिक भविष्य सुरक्षित रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थसूचिः

१. मालती परुलकर जहाँ पौ फटनेवाली, पृ.६९; २. मालती परुलकर जहाँ पौ फटनेवाली, पृ.५१; ३. मन्नूभण्डारी-महाभोज, पृ.७९; ४. प्रतिभा राय-द्रौपदी, पृ.१५७; ५. राशिप्रभाशास्त्री-मीनोंर, पृ.३३

असिस्टन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
महात्मा गाँधी कॉलेज, त्रिवेन्द्रम

पन्द्रह बीस साल उम्र में बडे श्री राऊफ परवेज से करा दी गयी। अकेला पलाश उपन्यास के जमशेद तहमीना एवं रेगिस्थान कहानी की देव नारि दम्पत्तियों के अनमेल विवाह से उत्पन्न संधर्ष में लेखिका के दाम्पत्य जीवन की झलक हमें नज़र आती है। अपने घर के खुले वातावरण में रहने के पश्चात ससुराल में मेहरुन्निसा जी को धार्मिक रूढियों से पूर्ण वातावरण मिला जिससे उनका दम घुटने लगा। उनका ससुराल रायपुर था। राऊफ परवेज जी खुद एक शायर थे इसलिए मेहरुन्निसा जी के लेखन क्षमता का सम्मान करते थे। लेकिन लेखन को जारी रखनके के लिए उन्हें अनेक संघर्षों में गुज़रना पडा। ससुरालवाले उन्हें पर्दे में रखना चाहते थे लेकिन प्रगतिवादी चेतना से परिपूर्ण मेहरुन्निसा परवेज ने धार्मिक कट्टरपन का विरोध किया और साहित्यिक एवं सामाजिक कार्यें में निर्भय होकर भाग लिया। नारी स्वतंत्रता एवं समानता की भावना उनके लेखन में ही सीमित न रहकर उनके जिन्दगी में है। हमें इसके कई उदाहरण सुलभ दिखायी देते हैं।

विवाह पश्चात् करीब दस ग्यारह साल तक माँ न बन पाने के कारण समाज और परिवार ने मेहरुन्निसा जी के लिए बांझ विशेषण का प्रयोग किया। उनके इस पीडा का वर्णन उन्होंने आँखों की दहलीज उपन्यास की तालिया बन्द कमरों की सिसकियों कहानी की मौना और बंजर दोपहर कहानी के प्रमुख पात्र के द्वारा किया है। सन् १९७० में सलीम के जन्म से उनका यह कलंक मिट गया। लेकिन वैचारिक भिन्नता ने श्री राऊफ परवेज और मेहरुन्निसा जी को सन् १९८७ में अलग कर दिया। अब तक उन्होंने जो कुछ भी कमाया सब कुछ पीछे छोड देना पडा। उन्हें मजबूर होकर ममता का गल भी घोट देना पडा। अंतिम चढाइ कहानी में उन्होंने अपनी इन्हीं भावनाओं को शब्द दिया है।

जीवन की डोर हमेशा उसके हाथों से छिटक जाती और वह आँखों में आंसू लिए छिटकी डोर को फिर फिर लपेटने की कोशिश करती मन जिद्दी बच्चों सा ऐंठकर बैठ जाता। (मेहरुन्निसा परवेज सोने का बेसर अंतिम चढाई पृ.१३१)।

मेहरुन्निसा जी तलाक पश्चात अपने मायके बिलासपुर आकर रहने लगी। लेखन और सामाजिक कार्यों से वे जुडी रही। लेकिन उनका इस प्रकार मायके में रहने को घरवालों ने प्रोत्साहित नहीं किया। इस दौरान जिस मानसिक संघर्षों से उन्हें गुजरना पडा इसकी झलक हमें उसका घर उपन्यास में एसमा बूँद का हक कहानी में प्रधान नारी पात्र ढहता कुतुबमिनार कहानी में सपना आदि पात्रों में दिखायी देती है।

श्रीमती मेहरुन्निसा परवेज ने सन् १९७९ में डा भगीरथप्रसाद से अन्तरजातीय विवाह करने का निश्चय किया। इसके लिए उन्हें घरवालों से संघर्ष करना पडा जिसका वर्णन उन्होंने बौना मौन कहानी में किया है। डा भगीरथप्रसाद भिंड ग्वालियर के रहने वाले हैं। वे तलाकशुदा और दो बेटियों के पिता है। कोई नही कहानी में लेखिका को इस दौरान हुए मानसिक तनाव का वर्णन है। अन्तरजातीय विवाह करने के पश्चात उन्हें मायके और ससुराल में विरोध का सामना करना पडा। भिंड के लोग रायपुर के लोगों से भी ज्यादा धार्मिक रूढियों को मानने वाले थे। लेकिन भगीरथजी ने धर्म के व्यावहारिक रूप को स्वीकार किया इसलिए मेहरुन्निसाजी के दाम्पत्य जीवन में धर्म कभी बाधा बनकर नहीं आया। अम्मा सजा जूठन लौट जाओं बाबूजी आदि कहानियों को लेखिका ने इसी परिवेश में लिखा है। सिमाला प्रसाद और समर प्रसाद के जन्म ने उनकी ज़िदगी को सुखद बनाया।

महरुन्निसाजी के सुख और सान्ति भरे जीवन में दुःख के बादल ने घेर लिया। उनके सत्रह वर्णीय पुत्र श्री समरप्रसाद के अकस्मात निधन २८ अगस्त १९९८ ने उन्हें मानसिक रूप से बिखेर दिया। उन्हें ऐसा प्रतीत हुआ कि जैसे वे जीवन के समरा में नितान्त अकेली हो गयी है। समर और लाल गुलाब कहानियों को पढकर उनके दुख की गहहाई को समझ जा सकता है। अपने दिवंगत पुत्र के स्मृति में उन्होंने समर लोक नामक तैमासिक पत्रिका की स्थापना कीय़ यह पत्रिका एक माँ का रचनात्मक समर तर्पण है। उनके सृष्टिपरक एवं व्यक्तिपरक ज़िदगी के यात्रा के दौराकन हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते है कि जन्म से लेकर अब तक उनके जीवन में संघर्ष ही साथी रहा है। लेकिन फिर भी वे लगातार आगे बढती रही है।

संदर्भः

२. मेहरुन्निसा परवेज जी द्वारा लेखिका को दिए गए व्यक्तिगत साक्षात्कार; २. मेहरुन्निसा परवेज जी द्वारा सागरजी को दिए गए साक्षात्कार सारिका मार्च १९७२; ३. मेहरुन्निसा जी द्वारा उर्कमिला शिरीष जी और राजेश दुबे जी को दिए साक्षात्कार मनस्वी अंक १२,२०००; ४. मेहरुन्निसा जी के उपन्यास और कहानियाँ

मारत्तोम्मा तियोलजिकल सेमिनारी, कोट्टयम

प्रकाशनार्थ

हाइकु

राजेन्द्र परदेसी, भारतीय पब्लिक अकादमी, चांदर रोड, फरीदीनगर, लखनऊ २२६०१५

चंचल मन
अराधना करके
भटका करे
मन चातक
सौन्दर्य तुम्हारा
चन्द्र समान
वासनामय
अशांत चित्तवृत्ति
व्यथा ही व्यथा
आस्था टिकाये
तुलसी का विरा
माता पूजती
साँझ झुकती
आस्था को पूजती
दीप जलाए
भ्रमित मन

भटकता राह से
गति रुकती
त्याग ही पाता
जगत में सम्मान
त्याग तो करो
अतीत बीते
सत्य के पथ चल
भविष्य बने
राह बनाओं
संकल्पी कुदाल से
चट्टाने तोड़ों
सत्य की मूर्ति
झूठ के समाज में
उपेसित हैं
सत्य का यहाँ
कौन पालनहार

झूठ व्यापार
संवाद कर
स्वीकारता ज्ञान
राह आसान
व्यर्थ विवाह
जीवन अनमोल
क्षण समाप्त
मन से हारा
संकल्प पिछड़ता
विजय कहाँ
भय का भूत
दुश्चिन्ताएं जन्मती
लक्ष्य बाधित
अपने सभी
पर भर न पाते
एकाकीपन। ●

बोधिपथ

डॉ. सुरेश उजाला, संपादक, उत्तर प्रदेश
मासिक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उ.प्र.

मुझे याद है
शाक्य
और
कोलिय वंश के बीच
जबरदस्त टकराव
बार-बार
रोहणी नदी
जल-बटंवारे को लेकर
संघर्ष
अंततः-
शाक्य संघ परिषद का
कठोर फैसला
हुक्म
और-
उसकी तामील
जिसके तहत-
करना था-युद्ध
अथवा
संपत्ति का त्याग
था फिर-
रातोरात - देश त्यजन
जिसका परिणाम
जानता था - मैं
भलीभाँति
बहरहाल-
जैसा तुम चाहते थे
वैसा ही हूँ
हे! शाक्य संघ...
मैं त्याग चुका हूँ
अपना सर्वस्व
सिवा तन के
और
बन चुका हूँ धर्म-प्रवर्त्तक
विश्व के मानचित्र पर
मानव-कल्याणार्थ
क्योंकि

मुझे याद है
सम्पूर्ण घटनाक्रम
हंस-वृद्धरोगी-
संयासी
जिन्होंने-
झकझोर दिया था
मैं और मेरा
अंतःकरण
तदोपरांत
मैंने खोजा
भव-बंधनों के भ्रम-जाल से
मुक्ति-मार्ग
यानि-सृष्टि की उत्पत्ति
वृद्धि
और
विनाश
वस्तुतः
विकास की गति
और
उसका रहस्य
सुजाता की खीर का
शक्ति संचार
आँख-कान-नाक-जीभ
त्वचा
और मन से जाना
रूप-शब्द-गंध-रस
स्पर्श
और मनोविकार की प्रवृत्ति
इसके अलावा
ईश्वर-परमेश्वर
आत्मा-परमात्मा
पाप-पुण्य
जन्म-पुनर्जन्म
स्वर्ग
और
नरक की असलियत

ढोंग और पाखण्ड का
फैलाव
शील-समाधि-प्रज्ञा की गुंथन
और
उनका जीवन-महत्व
जिन्होंने बनाया
सिद्धार्थ को मानव
मानव को तथागत
तथागत को महामानव
महामानव को बोधिसत्त्व
और
बोधिसत्व को आदमी
बोधित्व के लिए
शायद!
उसी का स्वरूप
उसी का बिम्ब
उसी का असर है
अब्राहिम लिंकन द्वारा-
अमेरिका में
दास-प्रथा की समाप्ति

मार्टिन लूथर किंग द्वारा
अश्वेतों की मुक्ति
प्रांसीसी युद्ध
यानि फ्रांस में-
मुक्ति आंदोलन के तहत
न्यास-समता-स्वतन्त्रता
और
बंधुत्व के आधार पर
राज-व्यवस्था
नेल्सन मंडेला द्वारा
दक्षिण अफ्रीका में
गोरे-काले
रंग-भेद का खात्मा
बलादि मिर इलीज लेनिन
द्वारा
सोवियत रूस में
अक्टूबर-क्रांति
जार-द्वितीय की हार
सर्वहारा की विजय

और
भारत में
बोधिसत्व भारत रत्न
डा. भीमराव अम्बेडकर द्वारा
जाति-विहीन समाज की-
संरचना
स्थापना लक्षण
जिनके कारण आया
बदलाव
निरन्तर दुनिया में
फिर भी....
हे शाक्य संघ!
मैं ऋणी हूँ
आभारी हूँ
कृतज्ञ हूँ -
आपके आदेश
और
निर्णय का

•

प्राकृतिक आपदा - परक दोहे

प्रो. डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, डी.लिट., प्रोफेसर,
अध्यक्ष (पूर्व), हिन्दी विभाग, भावनगर विश्वविद्यालय, भावनगर-गुजरात)

सुनामी की बाढ़ में,
चले गये उस पार कुछ
आया है भूकम्प अब,
विकिरण भी फैला बहुत,
सभी आपदाएँ कभी,
होता महाविनाश तब
सूनामी की बाढ़ में
बहती कारें पशु बहे
सूनामी प्रलयंकरी,
मनुज मरे पशु-पक्षी भी,
विकिरण से होता बहुत,
वैज्ञानिक होते विवश
आग भयंकर लग रही
पशु-पक्षी सब जल मरे

सूनामी में बह गये,
अता-पता उनका नहीं,
हैं अनाथ बच्चे हुस
कौन उन्हें दे प्यार अब,
दृश्य भयंकर देख लो
शासन बेबस-विवश है
सपकने बहे हज़ार।
जीवन मौत कगार।।
सूनामी के साथ।
लिये तबाही साथ।।
आ जाती इक साथ।
शासन मलता हाथ।।
बहे मनुज घर-बार।
गणना है दुशवार।।

वार-न-पारावार।
बहते हैं घर द्वार।।
जान-माल नुकसान।
काम न आता ज्ञान।।
जलता सब सामान।
जलते हैं इंसान।।
कितने घर परिवार।
निष्ठूर पारावार।।
दर-दर ठोकर खायँ।
कौन उन्हें अपनाय।।
सूनामी के आज।
ईश्वर रक्खे लाज।।

•

'चिरजीव' महाकाव्य में भारतीयता

डॉ. आशा

भारतीयता भारत से जुड़ा हुआ है। जो भारत की है, भारत से अपनी है, वही भारतीयता है। भारत का संस्कार, भारत की आत्मा, हज़ारों सालों से जन-मानस के स्पन्दन, पहचान भारतीयता है। वह हम भारतीयों को दुनिया से अलग दर्जा देती है। आज भूमण्डलीकरण और बाज़ारीकरण की ओर कलंग मारने जन-मानस भारत की आत्मा को पहचानने केलिए समय निकाल नहीं पाते। शायद यही कारणवश उसे मानव-समाज में पुनः प्रतिष्ठित करने की कोशिश हो रही हैं।)

भारत के बारे में सोचते वक्त महा-सन्तें की, ऋषियों की, राजनीतिज्ञों की, ज्योतिषियों की, कवियों की, विद्धानों की, राजा-महाराजाओं की, ्नेक महा-मनीषियों की तस्वीरें आँखों के सामने से गुज़रने लगती हैं। इस दुनिया के सबसे पुराना साहित्य वेद है। यह भारत की देन है। इस पर हमें गर्व होना चाहिए। वेदों में समता को प्रधानता दी गयी है। अख्रण्डता और एकता भारत की आत्मा है। उसमें वर्ण-व्यवस्था की गुंजाइश नहीं। जब हम वेदों की गहराइयों में जाएं तो, वहाँ एकता और चिरन्तन के सत्य दिख्राई देते हैं, जिससे जगत की उत्पत्ति हुई है। एक ही शक्ति-स्रोत से दुनिया में मौजूद सब कुछ बनाया गया है - ऐसा सन्देश देनेवाले राष्ट्र में ही जात-पान्त का बीज बोया गया है। बगवद् गीता भी यही बताता है कि चातुर वर्ण्य जन्म से नहीं कर्म से बनता है।

संस्कृति का जन्म व्यक्ति के हृदय में होना चाहिए। अगर हृदय प्रकाश से पूर्ण रह जाता है तो वहाँ अन्य कुटिल चिन्ताओं के लिए जगह नहीं मिलेगी। ईश्वरीय सत्ता हमारे मन के भीतर है तो वहाँ अन्धकार नहीं होगा। ज्ञानी भी वेदों का अध्ययन करके उसका सार ग्रहण नहीं करता। क्योंकि उसके मर्म ढूँढने का प्रयास नहीं होता है। (सन्त कबीर के अनुसार-

चारि वेद पंडित पढै, किया न हरि से हेत।
बालि कबिरा ले गया, पंडित ढूँढै ख्रेत।।)

पंडित चारों वेदों का अध्ययन करके भी प्रभु से प्रेम करना नहीं जानता। केवल वाक्य ज्ञान ही होता है। वेदों का मर्म या सार का ग्रहण नहीं करता है। वेद रूपी ख्रेद में प्रेम और ज्ञान से युक्त बाल (धान की कलम), जो सारतत्व है, उसे कबीर ने ग्रहण कर लिया है। पंडित केवल शब्दों में उसे ख्रोजते रहे।[१]

अंश सुरक्षित रहता है, उसे प्रज्ज्वलित करने की कोशिश साहित्य में होती है (ऐसी एक, ज्वाला डॉ.एन.चन्द्रशेख्ररन नायर का महाकाव्य चिरजीव में दिख्राई देती है। भारतीयता के प्रतीक-स्वरूप, अमर कहलानेवाले सात चिरजीवों के पावन कथा को काव्य-बद्य किया है। वे सात चिरजीव हैं-अश्वत्थामा, बली, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृप और परशुराम। ये अपने अपने स्वभाव विशेष से भारतीयता के प्रतीक बन गये हैं।

सात चिरजीवों की कथा में भारत की पौराणिक कथाएँ और साहित्य प्रतिफलित होता है। इसमें रामायण, महाभारत तथा श्रेष्ठ राजाओं की कथा है। पौराणिक भारत से एक यात्रा करने का आनन्द प्राप्त होता है। अनेक कथाएँ, उपकथाएँ, तथ्य, सत्य-मानव जीवन को प्रभापूर्ण बनाते हैं। संस्कृति के धागे में गूँथे इन मोतियों की चमक भारतीयता है।

अश्वत्थामा महापातकी होते हुए भी मित्रता का प्रतीक बनकर उभरता है। उन्होंने सारी कतूर्त धर्म के विरुद्ध किया था। युद्ध नीति के विरुद्ध रात के अन्धेरे में सोये हुए लोगों को मारा था। दुर्योधन के प्रति घनिष्ट मित्रता ने उन्हें धर्म-नीति से अलग चलने की प्रेरणा दी। अश्वत्थामा अपने जीवन से दुनिया को महाविपत्तियों के बारे में चेतावनी देते हैं। उनके जीवन से हमें बहुत कुछ सीख्रना चाहिए जिससे हम सावधानी और सतर्कता से काम ले सके। उनका जीवन महापातकी का होते हुए भी एक मिसाल बनकर सामने उभरता है। ऐसे वे चिरजीव बनने योग्य बन गये।

व्यास तपसिद्धि और पांडित्य का प्रतीक है। अपने ही वंश का आपसी विरोध और स्पर्धा की गवाह है। अपने तपोबल से होनी को टाला नहीं सके। महाभारत की रचना भी ख्रुद की है।[२]

भगवान शिव ने अनेक बार परशुराम के गुणों की प्रशंसा की है। देवासुर युद्ध में देवों की सहायता करने के लिए शिव ने परशुराम को भेजा था। शिव द्वारा दिये गये दिव्यास्त्रों में एक परशु था। महारथी कर्ण परशुराम का शिष्य था। शैव चाप तोडने के कारण दाशरथी का भी सामना करने का मौका प्राप्त हो गया। परशुराम के हाथ के शैवचाप को राम ने घुमाया तथा उनका तेज देख्रकर परशुराम स्तब्ध रह जाता है और अपना तेज भी उन्हें सौंपकर चले जाते हैं। (पृ.२०२) रामायण में परशुराम कई अवसरों पर कई बार प्रकट होते हैं। ब्राह्मणकुलों को निवास स्थान प्रदत्त करके परशुराम दण्डकारण्य में सीता-लक्ष्मण समेत रहते राम से मिलने आते हैं-

आया हूँ मैं केरल भूमि बनाकर
देख्रें इस परशु को सन्-कर्म भी देकर
ब्राह्मण कुलों को भूमि की संपदा देकर
काटकर पेड़ों को उन्हें निवास देकर।[३]

परशुराम ने पिता का वचन पालन किया था, क्षत्रियों का दंभ हराकर अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया था, युग युग के जीवन धर्म के प्रतिरूप बन गये थे। इस तरह वे चिरजीव बन गये (पृ.२०८-२०९)।

सात चिरजीवों की कथा में भारत की पौराणिक कथाएँ और साहित्य प्रतिफलित होता है। इसमें रामायण, महाभारत तथा श्रेष्ठ राजाओं की कथा है। पौराणिक भारत से एक यात्रा करने का आनन्द प्राप्त होता है। अनेक कथाएँ, उपकथाएँ, तथ्य, सत्य, मानव जीवन को प्रभापूर्ण बनाते हैं। संस्कृति के धागे में गूँथे इन मोतियों की चमक

कविता

राही

पालोड वासुदेवन

अनुः रमाउण्णित्तान

काले-काले बादलों पर,
मिट्टी की सुन्दरता पर,
पेडों की शाखाओं पर,
तू ने ही ठंडी भर दी।

बरसाते आसमान में
फूल भरे जंगलों में
मीठी-मीठी बोली में
तू ने ही सुन्दरता भर दी।

आसमान की ललिमा पर,
सीढियों पर, तारों पर
लाल भरी कुमुदिनी पर
तू ने ही लालिमा भर दी।

जुहियों के जंगलों पर
फूले-फले विपिन पर
तेरी सुन्दरता को देखने
खडा हूँ प्रतीक्षारत मैं

केवल एक पथिक हूँ मैं
आवाज़ सुनी मीठी तेरी
मुग्ध हुआ सुन्दरता पर
केवल मैं हूँ एक पथिक। ●

लघु कथा

बदलाव

डॉ.वी.गोविन्द शेनाय, एम.ए.,एल.एल.बी.,पी.एच.डी.,
सौभाग्य, त्रिचूर ६८०६५५

गणेशी ने मिठाई का बक्सा सिर पर रखा और खाली हाथ चल दिया घरकी ओर। आज कुछ भी नहीं बिका। घर की बनाई मिठाई वर्षों से बेचता था स्कूली बच्चों को। घाटा अब बरदाश्त के बाहर हो गया था। बच्चों की रुचि बदल गई थी और गणेशी अपने को बादल नहीं पाया था। बैंक चपरासी बंकू आता दिखा। मित्र था। उसकी जगह बैंक में प्लस्टू वाला पढा लिखा नियुक्त हुआ था। अपढ बंकू अब बैंक केलिए काम का नहीं रह गया था। दोनों मित्रों ने कुशल क्षोभ पूछने के बहाने दुःख, दर्द का आदान प्रदान किया और उसमें ऐसे मशगूल होगये कि और कुछ याद ही नहीं रहा। पुलिस पर पथराव करनेवाली इनकलाबी भीड में फंस गये। पुलिस ने सहजा कारर्वाई शुरु की तो भगदड मच गई और शेष को पुलिस जबर्दस्ती पुलिस स्टेशन ले गई। पुलिस कमिशनर ने अभियुक्तों पर नज़र दौडाई जिन में बक्सा लिये खडा गणेशी भी दिखा। कमिशनर ने एकदम इन्स्पेक्टर से कहा, उस बक्सेवाले को उसके कर पहुँचाओं अभी पुलिस वैन में।

प्राइमरी में पढते वक्त कमीशनर साहब गणेशी के ग्राहक थे, एक बार मिठाई चुराकर खा भी गये थे। ●

ये भी शोध-पत्रिका के संरक्षक बने

नाम : **रजनी सिंह**

जन्म : १५ दिसंबर १९४२ ई॔ को डिबाई (उ.प्र.)

माता : शर्बती देवी,

पिता : मुरारी लाल गुप्ता (शिक्षविद्)

पति : डा.सुरेशचन्द्र सिंह (प्रतिष्ठित चिकित्सक)

संतान : पाँच पुत्रियाँ (विवाहित) उच्च योग्यता प्राप्त। पुत्रवत् दामाद, नातिन, नाती।

योग्यता : हिन्दी व आंग्ल भाषा से पोस्ट ग्रेजुएट, अनेक क्षेत्रों में प्रशिक्षण व प्रबंधन में गहन अध्ययन। पेंटिंग, ड्रेस मेकिंग, गृहशास्त्र, इन्टीरियर डेकेरेशन, योगशास्त्र में योग्यता।

संस्थापन : महिला सहयोग समिति, डिबाई (सन् १९७५ एन.जी.ओ); रजनी पब्लिक सीनियर सैकेन्डरी स्कूल, डिबाई (सन् १९८२ सी.बी.एस.ई.); राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान, डिबाई (सन् २००० मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार); रजनी पब्लिक जूनियर स्कूल, चौंढेरा (सन् २००४); कादम्बिनी क्लब, डिबाई (सन् २००४); आर.जे.इंस्टीटयूट ऑफ हायर एजूकेशन, चौंढेरा (सन् २००८)।

साहित्य सृजन : झोंके बयार कें (काव्य संग्रह), यंत्र सीता तत्र नारी (गद्य शोध), नन्हीं जिज्ञासो (बाल काव्य०संग्रह), प्रकृति मेरी प्रकृति (नैसर्गिक काव्य-संग्रह), तथ्य-कथ्य (सांखी-संग्रह), माँ तथाता (मातृ भक्ति काव्य-संग्रह), कुछ-कुछ (काव्य-संग्रह), भूमिजा भूमिका, (सीता महा-काव्य), आओ चलो सैर करें (यात्रा-वृंतांत), दृष्टिकोण (प्रतिक्रियाएँ)।

सम्मान : रैड एण्ड व्हाईट बहादुरी सम्मान (१९९८-९९), काव्यकोकिला, राष्ट्रीय सहारा द्वारा प्रेरक व्यक्तित्व सम्मान, अमर उजाला, प्रतिभा सम्मान और साहित्य जगत की अनेक संस्थाओं द्वारा समय-समय पर अनेक सम्मान, अलंकरण तथा राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय मंचों पर मानद उपाधियों से सुशोभित किया गया है।

हॉबी : खाना बनाना, खिलाना, अतिथि-सत्कार, सिलाई, कढाई, भवन-निर्माण, शिक्षा एवं समाज जाग्रति, अभियान, नारी-विमर्श, लेखन, पुस्तक प्रेम, जीवन का सम्पूर्ण आनंद सकारात्मक सोच के साथ। भ्रमण देश-विदेश।

संपर्क : रजनी विला, डिबाई २०२३९३ (उ.प्र.)
जनपदः बुलंदशहर, उ.प्र., भारत।
Mob: 09412653980, 05734 265101,
Email: 4ajnisingh2009yahoo.com

'चिरजीव' महाकाव्य में भारतीयता...

भारतीयता है।

१. साखी, पृ.१६१
२. पृ.१९५, चिरजीव
३. पृ.२०८, चिरजीव

असि. प्रोफसर, एन.एस.एस. कोलेज (हिन्दी विभाग)

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के ३२ वें वार्षिक सम्मेलन से अनुबंधित एस.बि.टी. साहित्य पुरस्कार प्राप्त

डा. सुवर्णलता
(श्री. शंकराचार्य वि.वि. केन्द्र, तलश्शेरी)
(मौलिक रचना-
'मौन बोल रहा है'- काव्य)
दस हज़ार रुपये और कीर्तिपत्र

डा. अनूपाकृष्णन
(गेस्ट लेक्चरर, केरल वि.वि.)
(शोध ग्रंथ)
दस हज़ार रुपये और कीर्तिपत्र

मानव संसाधन विकास मंत्रालय का पुरस्कार

डां. के.पी.प्रमीला
(असि. प्रोफसर, श्रीशंकराचार्य
संस्कृत वि.वि. हिन्दी विभाग,
कोट्टयम)
दस हज़ार रुपये और कीर्तिपत्र

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के ३२ वें वार्षिक सम्मेलन से अनुबंधित त्रिवेन्द्रम के कालेजीय छात्रों में हुए लेखन प्रतियोगिता 'केरल के हिन्दी साहत्य की गति-विधि' में विजयी छात्राएं

प्रथम पुरस्कार

राजलक्ष्मी
(शोध छात्रा एम.जी.कालेज, त्रिवेन्द्रम-४)
दो हज़ार रुपये
(प्रोफसर आर. जनार्दनन पिल्लै
पुरस्कार एक हज़ार रुपये)

द्वितीय पुरस्कार

कुमारी आशादेवी एम.एस.
(शोध छात्रा, केरल वि.वि.)
एक हज़ार पाँच सौ रुपये

तृतीय पुरस्कार

कुमारी रीजा आर.एस.
(शोध छात्रा, केरल वि.वि.)
एक हज़ार रुपये

तृतीय पुरस्कार

कुमारी स्मिता ए.
(शोध छात्रा आर.ऐ.एन.टी.)
एक हज़ार रुपये

हार की जीत में नारी चरित्र

आशादेवी एम.एस.

हिन्दी साहित्य की तमाम विधाओं को अपनी लेखनी से संपुष्ट करनेवाले अहिन्दी भाषी साहित्यकार हैं डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर। केरलीय प्रेमचन्द नाम से अभिहित नायरजी चिरंजीव महाकाव्य की सर्जना करके प्रथम केरलीय हिन्दी महाकवि होने का श्रेय भी प्राप्त कर चुके हैं।

'हार की जीतन' नायरजी का प्रथम कहानी संकलन है जिसमें आठ कहानियाँ संकलित हैं। इसमें आदर्श नारी के विभिन्न रूप मिलते हैं। नायरजी के नारी चरित्र भिन्न भिन्न भाव भूमि लेकर अपनी अमिट छाप अंकित करने में सक्षम है। वे अपनी अपनी स्वाभाविक गति से हृदय की विदना, संवेदना और अनुभूति व्यक्त करने में सफल रहे हैं।

'हार की जीत' कहानी का नारी पात्र मायादेवी भारतीय आदर्शों की प्रतिमूर्ति है। भारतीय नारी के निष्कलुष, स्फटिक-निर्मल व्यक्तित्व को उजागर करनेवाली मायादेवी अपने व्यक्तित्व की गरिमा से अपनी हार को जीत में परिणत कर देती है। कहानी में अपनी पत्नी मायादेवी को कवि सुश्री की कविताओं की ओर विशेषतः उन्मुख देखकर कणोल के शंकाग्रस्त राजा रानी मायादेवी से बिना कुछ कहे उसे छोडकर चला जाता है। राजा द्वारा की गयी अग्निपरीक्षा में रानी सफल होकर अपनी प्रतिष्ठा को प्रमाणित करती है जो भारतीय नारी की पहचान है। पति के प्रति उसकी निष्ठा उसके कथन से व्यक्त है - महाराज तो मेरेलिए परमेश्वर सदृश है। इस उम्र में उनके अतिरिक्त और किसी की छाया तक मेरे हृदय मन्दिर में नहीं पडी है। पुण्य से ही वह मुझे प्राणनाथ के रूप में मिल गये। (पृ.२८-२९) रानी की इन प्यार भरी बातों से राजा का मन स्वस्थ हो जाता है। आदर्श नारी का आदर्श रूप मायादेवी के माध्यम से कथाकार ने चित्रित किया है।

'भवोति अम्मा' कहानी का नारी पात्र भवोति अम्मा है जो कर्कशता की जीती जागती मूर्ति है। कथाकार का उद्देश्य इस नारी पात्र का रेखाचित्र खींचना नहीं, अपितु पाठकों का उसके बाहरी रुप को भेदकर अंतरंग में स्थित वेदना, ममता आदि के अथाह सागर से परिचय कराना है। पतिविहीन भवोति अम्मा स्वाभिमानी है जो दूसरों के सम्मुख हाथ पसारने को तैयार नहीं है। वह सदैव अपने वाक्य बाणों से सबको आहत करती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। अपने बच्चों को गाली देना तथा मारना-पीटना उसके नित्य क्रम में शामिल है। जिजीविषा से जूझती नारी समय के थपेडे खाकर चाहें अपने बाहरी आवरण को कितना ही कठोर बना दें, उसके अन्तर्मन में नारी-सुलभ भावनायें सदैव रहती हैं। कहानी के अंत में भवोति अम्मा का जो लाड़ प्यार कथाकार ने चित्रित किया है, इसका प्रमाण है।

'चमार की बेटी' कहानी ने नारी पात्र कान्ति के द्वारा निर्धनता के शिकार बननेवाले नारी समाज पर दृष्टि डाली गयी है। मानवता की प्रतिभा और कल्पना से निर्मित कान्ति का चरित्र उसे आदर्श नारी के रूप में प्रस्तुत करता है। पन्द्रह साल की उल्हड किशोरी प्रतिभाशाली नारी को उसका बेबस पिता निर्धनता के कारण अपनी उम्र की व्यक्ति से विवाह तय कर देता है जबकि उस व्यक्ति को कान्ति की उम्र से बडी पुत्री है। अपने सामने कोई मार्ग न दृष्टिगोचर होने पर कान्ति अपनी अदम्य इच्छाओं को तजकर गंगा की पवित्रता में लीन हो जाती है। उसका कथन, स्वाभिमान की रक्षा हेतु आत्महत्या करने केलिए विवश नारियों के मन का भाव है-मेरी तरह अनाथ लड़कियों केलिए गंगा ही एकमात्र अवलम्ब है। मेरे देश में पति की पवित्रता या योग्यता के बारे में कोई भी नहीं गाता (पृ.५८)। कान्ति उन प्रतिभाओं का प्रतीक है जो गरीबों के घर में उभरकर पल्लवित-पुष्पित होकर हास होते दिखते हैं। पुत्री का विवाह करवाने के वास्ते समान वयस्क वाले व्यक्ति को भी दामाद बनाने को विवश निर्धन पिता का चित्रण भी इसमें देखने को मिलता है जिसे अपनी पुत्री समान बच्चियाँ भी हो।

'कान्ह गायब हो गया' की लता का चरित्र एक वयस्क होती नवयुवती का चरित्र है। मातृहीन पुत्री को कलाकार पिता आनन्द लाड-प्यार से पालता है वहीं समाज के पाखंडी पुजारी मन्दिर जैसे पवित्र पावन तीर्थ पर उसे छेडने का प्रयास करते हैं। यद्यपि धार्मिक भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करना कथाकार का उद्देश्य रहा हो, लता का चरित्र ही कथानक के विकास में सहायक होता है। नारी की असुरक्षा पर इसमें विचार-विमर्श किया गया है।

अजंता का कलाकार कहानी की राजलक्ष्मी सौन्दर्य की मूर्ति है। स्थूल सौन्दर्य को महत्व देनेवाली राजलक्ष्मी का चित्रण करके कथाकार ने स्थूल सौन्दर्य चेतना पर व्यंग्य किया है। शारीरिक सौन्दर्य को सर्वोपरि माननेवाले व्यक्ति मन की सुन्दरता का अंकन कभी नहीं कर पाते। कहानी में, राजलक्ष्मी ने कलाकार का जो रूप अपनी कल्पना से निर्मित किया था, यथार्थ में उसके विपरीत एक अस्थिपंजर को देखकर उसकी कल्पना बिखर जाती है और वह इस स्थिति को झेलते हुए अपनी नौकरानी द्वारा कलाकार को कुछ मूल्य देकर जल्दी से जल्दी विदा करना चाहती है। दुनिया के नियमों को भूलकर जब वह राजलक्ष्मी के पास पहुँचता है तो स्वयं वह कलाकार को दुत्कार कर हटा देती है। बाहरी सौन्दर्य पर मुग्ध होकर आंतरिक सौन्दर्य से अनजान नारी समाज पर कथाकार ने दृष्टि डाली है जो आधुनिक समाज का दस्तावेज है।

'बाप का बेटा' कहानी में प्रेरणा दायक झाड़ूवाली का चित्रम भी खींचा गया है जो एक चित्रकार बाप को बेटे की कुशलता का परिचय दिलाता है। संक्षेप में नायर जी ने हार की जीत कहानी संकलन में नारी के विभिन्न भावों - प्रेरणादायक, ममता से पूरित, स्वाभिमानी व्यक्तित्व, के धनी, भारतीय संस्कारों से संपन्न, यहां तक कि बाह्य सौन्दर्य पर गर्व करनेवाली नारी - का सूक्ष्म अंकन किया है।

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, कार्यवट्टम कैंपस

तुलनात्मक अध्ययन की प्रासंगिकता

डॉ.एन.आर.चित्रा

मानव - बुद्धि की विशेष सिद्धियों में एक है तुलनात्मक चेतना। हमारे सभी विवेचन एवं मूल्यांकन का आधार भी यह है। किसी भी क्षेत्र में, किसी भी वस्तु की गुणपूर्णता को आँकना तुलना का कार्य है। साहित्यिक अध्ययन में प्रारंभकाल से लेकर साहित्यिक कृतियों के मूल्यांकन में तुलनात्मक रीति प्रयुक्त की जा रही है। कला, साहित्य और भाषा मनुष्य की सृष्टि है। मनुष्य के स्वभाव में देश-काल के अनुरूप प्रकट होनेवाले साम्य-वैषम्य का प्रभाव, भाषा, साहित्य और संस्कृति पर भी पडता है। मानव-समुदाय की सार्वजनिक संपत्ति-साहित्य, संस्कृति की उपज है, भाषा की संतान है। भले ही साहित्य की रचना और आस्वादन का निर्वाह व्यक्ति द्वारा हो जाता है, पर व्यक्तियों के जीवन-बोध को रूपायित करने में उसकी संस्कृति एक अहम् भूमिका निभाती है। विशाल भारत की संस्कृति एक है। किन्तु उसको रूप देने में विभिन्न भाषाओं, साहित्यों और संस्कृतियों का विशेष योगदान है। प्रत्येक राष्ट्र की संस्कृति की वाहिका उसका साहित्य है। उसके विकास में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों और सांस्कृतिक पहलुओं का बराबर हाथ रहा है।

काव्य और कला युगीन चिन्तन-प्रभाव से अस्पष्ट नहीं रहता। प्रत्येक युग में जीवन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप और दृष्टि में परिवर्तन आता है। साहित्यकार हमेशा नवीनता के आग्रही है। जाने या अनजाने साहित्यिक जगत में एक भाषा का प्रभाव दूसरी भाषा पर पडता है या एक सर्जक का प्रभाव दूसरे सर्जक पर पडता है। संसार की कोई भी भाषा अन्य भाषा से प्रेरणा पाये बिना विकास नहीं पा सकती। प्रत्येक भाषा के साहित्य के अपने विशेष गुण, स्वभाव तथा परंपरा होते हैं। लेकिन गहराई से विचार करने पर साहित्य की मूल सत्ता एक है जो देश, काल और भाषा की सीमाओं के परे हैं। साहित्य में निहित इस मूल चेतना को पहचानना तुलनात्मक अध्ययन का धर्म है। विभिन्न भाषा-साहित्य के बीच समानता, भिन्नता और समांतरता जहाँ तक मौजूद है, इनके आधार क्या है, ये सब तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा समझा जा सकता है। भाषा और साहित्य की पारस्परिकता तुलनात्मक अध्ययन के विकास का मूलाधार है। विभिन्न भाषाओं के साहित्यिक विकास के साथ-साथ विश्व-साहित्य की मौलिक उपलब्धियों की जानकारी भी इससे प्राप्त होती है।

भारत की बहुभाषित स्थिति में तुलनात्मक अध्ययन की गुंजाइश ज़्यादा है। भारत जैसे विशाल राष्ट्र में अनेक भाषाओं और संस्कृतियों का सामासिक रूप दर्शनीय है। ऐसी कोई भी भारतीय भाषा नहीं, जिसमें हिंदु पुराण, वेद, संस्कृत साहित्य और पाश्चात्य साहित्य का प्रभाव नहीं पडा है। 'नानात्व में एकत्व' पर ज़ोर देते हुए विभिन्न साहित्यों के सार्वलौकिक स्वभाव की परख तुलनात्मक अध्ययन का लक्ष्य है। साहित्य के सर्वांगीण विकास में विभिन्न देशी एवं विदेशी भाषा और साहित्य की भूमिका क्या है, भाषा-वैविध्य के बावजूद भी साहित्य में मौजूद समानता क्या है, इन सबके आधार पर साहित्यिक एवं सांस्कृतिक साम्य-वैषम्य को समझने में तुलनात्मक अध्ययन सहायता देता है। एक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन भी है। साहित्य के अतिरिक्त भूगोलविज्ञान, इतिहास, भूमिशास्त्र, सामाजिक जीवनकम आदि का प्रभाव तुलनात्मक अध्ययन को अधिक रोचक नाता है। विश्व की भाषाओं और साहित्यों के बीच की दीकियाँ बनाते हुए वसुधैवकुटुम्बकम् की महान भावना नाने में तुलनात्मक अध्ययन तथा तुलनात्मक साहित्य हुआ है।

सेंट जोसफ़ कोलेज फोर विमन, आलप्पुषा ६८८००१

ये भी शोध-पत्रिका के संरक्षक बने

नाम : **डा. मिनी सामुअल**

जन्म : २८ जनवरी १९७४ में उत्तर प्रदेश के रेणुकूट नामक जगह पर हुआ था।

शिक्षा : दसवीं तक की शिक्षा उत्तर प्रदेश में तथा बाद में पी.एच.डी. तक की शिक्षा केरल के विभिन्न कॉलेजों में हुआ है।

शोध : मेहरुन्निसा परवेज़ का कथा-साहित्य - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

साहित्यिक रुचियाँ : (१) लेख्र और कहानी लिख्रने में रुचि
(२) कुछ आध्यात्मिक किताबों का अनुवाद।

वर्तमान गतिविधियाँ - डॉन बॉस्को स्कूल कोट्टयम में कार्यरत।

ये भी शोध-पत्रिका के संरक्षक बने

नाम : **डा. चित्रा एन.आर.**

जन्म : २ मार्च १९६०

शिक्षा : एम.ए.,एम.फिल.,पी.एच.डी., पी.जी.डिल्पोमा

संप्रति : असिस्टन्ट प्रोफसर, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सेन्ट जोसफ विमन्स कोलेज, आलप्पुष़ा ६८८००१.

फोन : 0477 - 2244622, 9847089754

साहित्यिक रुचियाँ : साहित्यिक समीक्षा में विशेष रुचि

यू.जी.सी मैनर प्रोजक्ट, रामचन्द्र शुक्ल और जोसफ मुंडश्शेरी, कतिपय मलयालम कहानियाँ अनूदित, २६ लेख्र आये हैं। कई नेशलन सेमिनारों में पेपर पढ़े हैं। शोध निदेशक है एम.जि. वि.वि. के.

श्री अक्षरगीता

(तेरहवां अध्याय)

डॉ. वीरेन्द्रशर्मा

श्रीभगवान बोले-

यह शरीर है क्षेत्र, पार्थ यों
जाना जाता है यह तन
है क्षेत्रज्ञ उसे जाने जो
ऐसा कहते ज्ञानीजन

हूं क्षेत्रज्ञ सभी क्षेत्रों में
ऐसा पार्थ मुझे जानो
ज्ञान क्षेत्रक्षेत्रज्ञ-ज्ञान है
यह विचार मेरा मानो

जो, जैसा वह क्षेत्र तथा फिर
उसका कारण, कौन विकार
जो, जैसा क्षेत्रज्ञ प्रभावी
सुन लो मुझसे वह सब सार

बहुधा पृथक कहे ऋषियों ने
छंदों द्वारा विविध स्वरूप
ब्रह्मसूत्र पदपुंजों द्वारा
युक्तियुक्त निश्चित कर रूप

अहंकार है बुद्धि, प्रकृति भी
महाभूत के सभी निकर
मन है एक, इंद्रियां दस हैं
होते पांच इन्द्रिय गोचर

सुख दुःख इच्छा द्वेष चेतना
धृति, स्थूल देह सविकार
यही क्षेत्र की परिभाषा है
कहा गया है जिसका सार

मान, दम्भ का भाव नहीं हो
क्षमा, अहिंसा, स्थिरता
शुचिता, आत्मविनिग्रह एवं
गुरुसेवा एवं ऋजुता

अहंकार का भाव नहीं हो
विरतिभाव विषयों में हो
जन्म मृत्यु का, जरा व्याधि का
दुःख दोष-अनुदर्शन हो

पत्नी पुत्र निकेत आदि में
हो ममत्व आसक्ति अभाव
इष्ट अनिष्ट प्राप्ति दोनों में
नित्यचित्त का हो समभाव

हो एकाग्र योग से मुझ में
भक्ति शुद्ध प्रेमा अविकल
बने प्रकृति एकांतवास की
नहीं प्रीतिकर जनसंकुल

नित्यवास अध्यात्मज्ञान में
ज्ञान-अर्थ परमेश्वर-रूप
दर्शन ज्ञान कहाता, इससे
अन्यभाव अज्ञान स्वरूप

जो है ज्ञेय कहुंगा उसको
जिसे ज्ञान अमृत पाते
उस अनादि को परम ब्रह्म को
सत् या असत् न कह सकते

पाणिवाद सब ओर नयन हैं
शिर मुख उनके हैं सब ओर
श्रवण सभी दिशि स्थित जग में
आवृत करके सब ही छोर

निर्गुण होकर गुणभोक्ता वे
इन्दरी बिना विषयज्ञाता
है आसक्ति न उनमें फिर भी
पूर्ण विश्वपोषक धाता

अन्तः बाह्य प्राणियों में हैं
वे ही चेतन जड़ भी हैं
सूक्ष्म भाव से अविज्ञेय हैं
वे ही दूर, निकट भी हैं

भूतों में स्थित विभक्त से
नहीं विभक्त स्वयं वे हैं
वे ही ज्ञेय, सृजन कर प्राणी
पालन कर हर लेते हैं

तम से हैं अत्यन्त परे वे
ज्योति ज्योतियों की वे हैं
ज्ञानगम्य वे, ज्ञेय, ज्ञान हैं
सबके उर में रहते हैं

क्षेत्र, ज्ञान का तथा ज्ञेय का
प्रस्तुत यह संक्षिप्त स्वरूप
तत्वज्ञान से इसके मिलता
मेरे प्रिय को मेरा रूप

प्रकृति पुरुष ये दोनों ही तो
हैं अनादि ऐसा जानो
सभी विकारों तथा गुणों को
प्रकृतिजन्य ही तुम मानो

कार्य, करण में, कर्तापन में
प्रकृति हेतु, जाना जाता
सुख दुःखों के भोक्तापन में
पुरुष हेतु है कहलाता

स्थित होकर पुरुष प्रकृति में
प्रकृतिजन्यगुण भोगी है
सदसद्योनि जन्म पाता वह
संग गुणों के कारण है

उपद्रष्टा, अनुमंता, भर्त्ता
भोक्ता तथा महेश्वर हैं
इस तन में वे परम पुरुष ही
कहलाते परमेश्वर हैं

पुरुष, प्रकृति का सहित गुणों के
ज्ञान प्राप्त यों जो करता
करता हुआ कर्म भी सब विधि
वह फिर जन्म नहीं पाता

स्वयं आत्म-अनुभव करते हैं
ध्यानयोग से कितने ही
सांख्ययोग से अन्य तथा कुछ
कर्म योग के द्वारा ही

नहीं जानते इसे अन्य जो
श्रवण दूसरों से करते
पूजन करते श्रवणपरायण
वे भी मृत्यु पार करते

जितने भी जड़ चेतन, अर्जुन
समुद्भूत प्राणी जानो
क्षेत्र तथा क्षेत्रज्ञ योग से
समुत्पन्न उनको मानो

नश्वर सभी प्राणियों में जो
शाश्वत देखा करता है
स्थित सम परमेश्वर को जो
वही यथार्थ समझता है

सब में ही समभाव अवस्थित
जो देखे परमेश्वर को
विनष्ट न करके स्वयं आपको
करता प्राप्त परम पद को

करती प्रकृति सभी कर्मों को
ऐसा देखा करता है
स्वयं अकर्ता मान स्वयं को
सम्यक् वही देखता है,

पृथक भाव जब भूतों के जो
एकस्थित देखा करता
सभी भूतविस्तार उसी से
ब्रह्म प्राप्त तब है करता

है अनादि, निर्गुण, अव्यय वह
अर्जुन, परम आत्मा है
है निर्लिप्त, नहीं करता कुछ
यद्यपि तन में रहता है

सूक्ष्मरूप से व्याप्त सभी में
है आकाश न लिप्त कहीं
वैसे तन में स्थित सबके
आत्मा भी है लिप्त नहीं

लोक सभी करता आलोकित
पार्थ एक दिनकर जैसे
क्षेत्री एक प्रकाशित करता
पूर्ण क्षेत्र को ही वैसे

क्षेत्र तथा क्षेत्रज्ञ भेद जो
ज्ञाननेत्र अनुभव करते
मूलप्रकृति से मुक्तभाव को
परमब्रह्मपद वे पाते

इला अपार्टमेंट्स, दिल्ली

मां बेचके खायेंगे

तन्हा नागपुरी, पांढराबोडी, पश्चिम नागपुर-३३

भूखें पेट की ख्वाहिश पे क्या बेचके खायेंगे,
वक्त आये नुमाइश का मां बैचके खायेंगे।
सारी खुदाई बेचकर दैरों-हरम के मारे,
काशी बेच के खायेंगे काबा बेचके खायेंगे।
इन्सानियत के तकाजों पे जब बिकेगी गैरत,
तब पत्थर की फरमाइश पे खुदा बेचके खायेंगे।
ऐ चांद तू लिये जा अपने सितारों को कहीं,
वरना बेचने वाले तेरा आस्मां बेचके खायेगे।
चमन के फूलों पे खूब भौंरें टूट पड़ेंगे,
पतंगे अपनी हवस पे शम्मा बेचके खायेंगे।
न जाने किस जमाने की बदगुमानी लिये हम,
अपनी औकात के सारे निशां बेचके खायेंगे।
महंगाई में जब कुछ भी नहीं रहेगा बिकने को,
तो फक्त लाश का उठता धुआं बेचके खायेंगे।
देश की एकता अखंडता को मार कर के गोली,
सरफिरे सारे भारत को नंगा बेचके खायेंगे।
ऐ मां तेरी कोख से अब जनमने वाले बेटे,
दुनिया में तेरी कोख का सौदा बेचके खायेंगे।
फिरका परस्ती के हाथों में आजादी नज़्र देकर,
संविधान हमारे देश का नेता बेचके खायेंगे।
सुकरात के मानिंद जल्दी जहर पी ले तन्हा
नहीं तो कातिल तेरे दर्द की दवा बेचके खायेंगे।

˙ÉlÉ¨ÉÏE ´ÉÉ±ÉOÉÊO

डा.जयशंकर शुक्ल (कवि एवं साहित्यकार),
भवन संख्या-४९, गली नं.६, बैंक कालोनी,
नन्द नगरी, दिल्ली ११००९३

प्रथम काव्य के सर्जन कर्ता
तुमको मेरा प्रणाम है
छन्द शास्त्र के प्रस्तुत कर्ता,
बारम्बार प्रणाम है।।

तप बल से पायी दिव्य दृष्टि,
सम्भव है जिससे कृपा वृष्टि,
संसृति के अविरल प्रवाह से,
आप्लावित करते पूर्ण सृष्टि,
चिर समाधि में रहने वाले,
तमसा तट पर धाम है।
प्रथम काव्य के प्रस्तुत कर्ता,
तुमको मेरा प्रणाम है।।

जीवन में उत्पात बहुत था,
मानस में संघात अधिक था,
चित्त मलिन कल्मष से होकर,
वृत्ति विकृत, संताप बहुत था,
पीड़ा से अर्थ बनाने के
थे उद्योगी, सरनाम हैं।
प्रथम काव्य के प्रस्तुत कर्ता,
तुमको मेरा प्रणाम है।।

पुन्य उगे पूरव जन्मों के,
जगे ध्यान अब के कर्मों के,
देव ऋषि से निर्देशित हो,
सम दृश्य हुए अपने मर्मों के,
स्वजनों को सुख देने वाले
ख्यात हुए, निष्काम है।
प्रथम काव्य के प्रस्तुत कर्ता,
तुमको मेरा प्रणाम है।।

वाहक बन गए ऐसे तप के,
मानक बन गए कैसे जप के,
मरा-मरा का सुमिरन करके,
ब्रह्म समान हुए इस जग के,
पिपीलिका गृह बनने वाले,
वाल्मीकि अब नाम है।
प्रथम काव्य के प्रस्तुत कर्ता
तुमको मेरा प्रणाम है।। •

लघु कथा

ÉxòÖ

डॉ.प्रत्यूष गुलेरी, कीर्ति कुसुम,
सरस्वती नगर, पो.दाड़ी १७६०५७

बस ठसाठस भरी थी। चंड़ीगढ़ से धर्मशाला आ रही थी. आगे तीन-चार छुट्टियां थीं। एक बुजुर्ग एमरजेंसी की दुहाई देता कंडक्टर के मना करने पर भी बस में चढ़ आया। रचनाकार का छोटा भाई भी उसी बस में अपनी पत्नी के साथ सवार था। उन दोनों को बुज़ुर्ग की उम्र देखते तरस तो आ रहा था पर वे दो की सीट पर तीसरे को बैठा नहीं सकते थे। वे उसके प्रति दया को मन में ही दबाए रखे। बुजुर्ग चंडीगढ़ से ककीरतपुर तक तो ख़ड़ा-ख़ड़ा चला आया पर उसके आगे रात के सफ़र में वह विवश था।

वह तीन सबारियों की सीट के पास आकर विनम्रता से बोला। वह जो बोला उसे रचनाकार के भाई ने गौर से सुना।

भाई सहाब! बोलते शर्म आ रही है। पर बोले बग़ैर रहा भी नहीं जा रहा। ख़ड़ा-ख़ड़ा बुरी तरह से थक गया हूँ। थोड़ी सी जगह बना देते तो थोड़ा आराम कर लेता।

सीट पर की तीनों सवारियों को उसका कहा नागुवार गुजरा। वे तीनों सवारियां एक साथ कह उठीं - बाबा! सीट तो तीन सवारियों की ही है। सफ़र भी तो दूर का है। जगह कैसे बने? बुज़ुर्ग के पास उनके कहे का जो तोड़ पेश किया गया वह भी पाठकों के समक्ष है। बुज़ुर्ग तीनों से संबोधित होते बोला - भाई साहब! जगह तो बन जाती है। पर यह तभी बनती है जब दिल में जगह हो।

रचनाकार का भाई स्तब्ध था जब उसने अगले ही क्षण देखा कि तीनों थोड़ा-थोड़ा सरके और बुज़ुर्ग को बिठा लिया। बुज़ुर्ग अब इतमिनान से सफर कर रहा था। •

परिचयवृत्त

नाम : **डा. जयशंकर शुक्ल किरण** **एम.ए. (हिन्दी, प्रा. इतिहास) एम.एड्, पी.एच.डी., नेट.जे.आर.एफ.साहित्य-रत्न**

कवि एवं. साहित्यकार

प्रकाशन-काव्य संग्रहः किरण, क्षितिज के सपने

काव्य संकलन : सरस्वती वंदना, शतक, उद्घोष, गीताभ (भाग-तीन), कविता बोलती है, गीताभ (भाग-चार), आँगन आँगन चाँदनी, गीताभ (भाग-पाँच), लोक दृष्टिकोण, गीताभ, भाग छः, त्रिधारा, गीताभ, भाग सात, कलमकार (भाग-सात), दोहों की चौपाल, नुपूर

संपादन : मानस हंस श्रीराम (त्रै.), विश्व वन्द्य श्रीराम (त्रै), नवोदय की आस (काव्य संग्रह), उद्घोष (काव्य संकलन)

सम्मान/उपाधि : व्याख्यान-वाचस्पति, काव्य-रत्न, काव्य-गौरव, सर्वोत्तम शिक्षक सम्मान (जनपदीय), सर्वोत्तम शिक्षक सम्मान (प्रादेशिक), लोक एवं संगीत-साधक, पांडुलिपि प्रकाशन योजना, श्री संतोष शर्मा अवार्ड, युवा गीतकार सम्मान, देव गुरू बृहस्पति सम्मान, परशु रत्न सम्मान

विशेष : देश के प्रमुख समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में रचनाओं/आलेखों एवं साक्षात्कारों का प्रकाशन, आकाशवाणी द्वारा काव्य का सरस प्रसारण, विभिन्न स्तरीय गीति संस्थाओं की सक्रिय सदस्यता, मंचों से विशिष्ट साहित्यिक रचनाओं का पाठ, वाचन, प्रस्तुति

संपर्क : टी.जि.टी. (हिन्दी), शिक्षा विभाग, दिल्ली सरकार भवन संख्या-४९, गली नं.६, बैंक कालोनी, नन्द नगरी, दिल्ली-११००९३, दूरभाष : ०९९६८२३५६४७

केरल हिंदी साहित्य अकादमी

लक्ष्मी नगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम ६९५ ००४

३२ वाँ वार्षिक सम्मेलन - कार्य-क्रम

स्थल : मन्नम मेम्मोरियल नेशनल क्लब, स्टाच्यू, प्रेस क्लब के निकट

समय : ९.३० बजे से अपराह्न ५ बजे तक (२६-७-२०१२) ९.३० बजे से रजिस्त्रेशन

१० बजे से नेशनल सेमिनार

प्रार्थना - **श्रीमती आर. राजपुष्पम** (मंत्री, के.हि.सा.अकादमी)

स्वागत - **डा.पी.लता** (प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, सरकारी महिला कालेज)

अध्यक्ष भाषण - **डा.एस.तंकमणि अम्मा** (महामंत्री के.हि.सा.अकादमी)

उद्घाटन - **डॉ.रजनी सिंह** (विख्यात कवयित्री, उ.प्र.)

बीज भाषण - **डॉ.टी.शान्तकुमारी** (पूर्व प्राध्यापिका, एम.जी.कॉलेज)

आलेख प्रस्तुति

(1) **केरल की हिंदी कविता - कुमारी रीजा एस.** (शोध छात्रा केरल वि.वि.)

(2) **केरल का हिंदी महाकाव्य - कुमारी आशादेवी** (शोध छात्रा केरल वि.वि.)

(3) **केरल का हिंदी कथा साहित्य - डॉ.अनूपा कृष्णन** (अतिथि अध्यापिका, केरल वि.वि.)

(4) **केरल का हिंदी निबंध साहित्य - डॉ.के.पी. प्रमीला** (प्राध्यापिका, श्री शंकराचार्य वि.वि., कोट्टयम)

(5) **केरल का गवेषण साहित्य - डॉ. सुनिलकुमार एस.** (प्राध्यापक,यूणिवर्सिटी कॉलेज)

(6) **केरल का हिंदी अनुवाद साहित्य-उपन्यास - डॉ.आशा.जी.**(प्राध्यापिका,संस्कृत कालेज)

(7) **केरल की हिंदी पत्रकारिता - डॉ. पी. लता, प्राध्यापिका** (सरकारी महिला कालेज)

(8) **केरल का हिंदी अनुवाद साहित्य-अन्य विधाओं में - डॉ.श्रीलता विष्णु** (प्राध्यापिका, श्री शं.वि.वि.)

(9) **केरल का हिंदी काव्य साहित्य - राखी बालगोपाल** (प्राध्यापिका, कार्यवट्टम)

(10) **केरल का जीवनी, आत्मकथा साहित्य - डॉ.उमाकुमारी** (विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, के.वि.)

(11) **केरल का एकमात्र संपादकीय-अवतरणिका-आत्मकथा-साहित्य - डॉ. के.पी. उषाकुमारी** (हि.वि., एम.जी.का.)

चर्चा - प्रतिभागी

(१ बजे से २ बजे तक भोजन)

अपराह्न ३ बजे से वार्षिक सम्मेलन और पुरस्कार वितरण

प्रार्थना - **श्रीमती राजपुष्पम** (मंत्री, के.हि.सा.अकादमी)

स्वागत - **डॉ. एस.तंकमणि अम्मा** (महामंत्री के.हि.सा.अकादमी)

अकादमी का वार्षिक प्रतिवेदन - **श्रीमती आर. राजपुष्पम** (सचिव, के.हि.सा.अकादमी)

अध्यक्ष - **डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर** (अध्यक्ष, के.हि.सा.अकादमी)

उद्घाटन - **आदरणीय केंद्रमंत्री श्री.के.सी.वेणुगोपाल जी (दीप प्रज्ज्वलन तथा भाषण)**

ग्रंथ का लोकार्पण आदरणीय केंद्रमंत्री के.सी. वेणुगोपालजी द्वारा डा.एन.चंद्रशेखरन नायर की रचना "केरल के हिंदी साहित्य का बृहद् इतिहास"

ग्रंथ स्वीकृति - **डॉ. प्रत्यूष गुलेरी** (विख्यात साहित्यकार, हिमाचल प्रदेश)

बीज भाषण - **डॉ. प्रत्यूष गुलेरी**

विशिष्ट हिंदी साहित्यकारों का आदर-सम्मान

(1) **डॉ. प्रत्यूष गुलेरी** (विख्यात साहित्यकार, हि.प्र.)

(2) **श्रीमती रजनी सिंह** (प्रख्यात कवयित्री, उत्तर प्रदेश)

स्टेट बैंक आफ त्रावणकोर का हिंदी पुरस्कार-वितरण। उपहार देते हैं महाप्रबंधक

(1) **शोध-ग्रंथ** (नयी कहानी, कथ्य, शिल्प और उपलब्धियाँ) - **डॉ.अनूपाकृष्णन** (अतिथी अध्यापिका)

(2) **मौलिक साहित्य के लिए** (मौन बोल रहा है (कविता) - **डॉ.सुवर्णलता एम.सी.** (प्राध्यापिका, हिंदी विभाग, शंकराचार्य वि.वि.तलश्शेरी)

(3) **मानव संसाधन विकास मंत्रालय का पुरस्कार - डॉ.के.पी.प्रमीला** (शंकराचार्य वि.वि.)

अकादमी चेयरमान डॉ.चंद्रशेखरन नायर जी प्रदान करते हैं कालेज के विजयी छात्रों केलिए अकादमी पुरस्कार

प्रथम - **कुमारी राजलक्ष्मी बि.ए.** (एम.जी. कालेज)

द्वितीय - **कुमारी आशादेवी एम.एस.** (केरल वि.वि., कार्यवट्टम)

तृतीय - **(१) कुमारी रीजा आर.** (शोध छात्रा, के.वि.वि.),
(२) स्मिता ए. (आर.आई.एल.टी., त्रिवेंद्रम)

आशीर्वाद भाषण

डॉ. फैसलखान (एम.डी. निंस मेडिसिट्टी पी.वी.सी,नूरल इस्लाम, वि.वि.)

डॉ. प्रत्यूष गुलेरी (प्रसिद्ध साहित्यकार, हिमाचल प्रदेश)

श्रीमती रजनी सिंह

डॉ. वी.वी. विश्वं (निदेशक, हिन्दी विद्यापीठ)

डॉ. सुवर्णलता एम.सी.

श्री. के.राजेन्द्रन (मानेजिंग ट्रस्टी, यवनिका पब्लिकेशन्स)

कृतज्ञता ज्ञापन - **डॉ. कुलदीप सिंह चौहान चौहान** (प्रबंधक, एस.बि.टी. हिंदी विभाग, पूजप्पुरा)

संचालक - **डॉ.पी.लता** (प्राध्यापिका, विमन्स कॉलेज)

राष्ट्रगीत

Kinfra

INSPIRING GROWTH

EVERYTHING AT ONE PLACE

For 16 industry-friendly years, Kerala Industrial Infrastructure Development Corporation (KINFRA) has endeavoured to provide perfect settings to help businesses flourish in Kerala. KINFRA provides a wide variety of Walk-In-And-Manufacture Parks for setting up industries across Kerala. 20 different sector specific industrial parks are developed by identifying and promoting core competency of each region. Navaratna Companies like HAL, BEL and BEML, as well as private entrepreneurs have benefited from setting up their units in our parks.

Key Sectors

Food Processing | Apparel/Textiles | Knowledge-based industries | Rubber | Seafood
Entertainment/Animation & Graming | IT/IIES Hardware & Electronics | Bio-technology

Kerala Industrial Infrastructure Development Corporation
(A statutory body of Govt. of Kerala)
KINFRA House T.C.31/2312 Sasthamangalam, Thiruvananthapuram 695 010, Kerala, India.
Phone : 0471-2726585, Fax: 0471-2724773 E-mail:kinfra@vsnl.com, www.kinfra.com

Kinfra
INSPIRING GROWH

पंजीयन संख्या R. No. 26957 - 1996

केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास

(प्रारंभ से सन् २०१२ तक का संपूर्ण विवरण)

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

ग्रंथकर्ता - डा.एन.चन्द्रशेखरन नायर

26-7-2012 को केन्द्रमंत्री श्री.के.सी.वेणुगोपाल जी द्वारा लोकार्पित हो रहा है।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के
३२वें वार्षिक सम्मेलन में लोकार्पण।

मूल्य
१२३.००

प्रकाशक:
के.हि.सा.अकादमी, त्रिवेन्द्रम-४

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के लिए शोध-पत्रिका डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर, श्री निकेतन, तिरुवनन्तपुरम - ४
द्वारा मुद्रित संपादित और श्रीरामदासमिशन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, तिरुवनन्तपुरम-८७ में मुद्रित।